Class: M.A. **Subject: Music (Vocal/Instrumental)**
Semester: 2
Course Type: Core Course **Course Code:** MUSI204PR
Course Name: General Study of Ragas and Light Music **Paper Type:** Practical

MUSIC
(General Study of Ragas and Light Music)

Lesson : 1 - 16

Dr. Nirmal Singh

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	रागेश्री राग का विलंबित ख्याल	1
5	इकाई - 2	भैरवी राग का विलंबित ख्याल	16
6	इकाई - 3	यमन राग का विलंबित ख्याल	29
7	इकाई - 4	रागेश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत	47
8	इकाई - 5	भैरवी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत	61
9	इकाई - 6	यमन राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत	77
10	इकाई - 7	रागेश्री राग का छोटा ख्याल	95
11	इकाई - 8	भैरवी राग का छोटा ख्याल	110
12	इकाई - 9	यमन राग का छोटा ख्याल	124
13	इकाई - 10	रागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत	141
14	इकाई - 11	भैरवी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत	156
15	इकाई - 12	यमन राग की द्रुत गत/रजाखनी गत	169
16	इकाई - 13	रागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (एकताल में)	184
17	इकाई - 14	सुगम संगीत भाग 1 (गायन)	201
18	इकाई - 15	धुन (वाद्य संगीत)	213
19	इकाई - 16	सुगम संगीत भाग 2 (गायन)	229
20		महत्वपूर्ण प्रश्न	242

प्राक्कथन

संगीत स्नात्कोत्तर के नवीन पाठ्यक्रम में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन तथा मौखिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक तथा मौखिकी परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में रागेश्री राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में गायन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में गायन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में वादन के संदर्भ में रागेश्री राग का परिचय, आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में वादन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में वादन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में गायन के संदर्भ में रागेश्री राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में गायन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में गायन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 10 में वादन के संदर्भ में रागेश्री राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 11 में वादन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 12 में वादन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 13 में वादन के संदर्भ में रागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (एकताल में) में तोड़ों सहित दी गई है।

इकाई 14 में गायन के संदर्भ में सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति गीतों का वर्णन किया गया है।

इकाई 15 में वादन के संदर्भ में देशभक्ति गीतों, गजल की धुनें दी गई है।

इकाई 16 में गायन के संदर्भ में सुगम संगीत के अंतर्गत भजन, गज़ल का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. निर्मल सिंह

Syllabus
M.A. in Performing Arts (Music)
(Hindustani Vocal/Instrumental)

SEMESTER 2

Semester II									
Course Code	**Course Type**	**Course Name**	**Paper Type**	**Max. Marks**	**ESE**	**CCA**	**Min. Pass %age**	**Teaching Hours Per Week**	**Credit**
MUSI-204PR	Core Course	General Study of Ragas and Light Music	Practical	150	100	50	45%	12	6

Course Objective

- To learn to perform different compositions in prescribed ragas on stage.
- To learn to perform Light Music and Dhun on stage.

Course Outcome

- The students will learn various prescribed ragas practically.
- The students learn to perform and present ragas on stage, in proper format before the audience.
- The students learn to perform and present Light Music and Dhun on stage before the audience.

Course of Study

1. Student has to prepare and present Drut Khyal/Drut Gat in all the Ragas. 70 Marks
   - Yaman
   - Rageshree
   - Bhairavi

2. Student is required to perform one 30 Marks
   - Two Light Music (for Vocal)
   - Two Dhun (for Instrumental)

इकाई-1
रागेश्री राग का विलंबित ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	राग रागेश्री
1.3.1	रागेश्री राग का परिचय
1.3.2	रागेश्री राग का आलाप
1.3.3	रागेश्री राग का विलंबित ख्याल
1.3.4	रागेश्री राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग रागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग रागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग रागेश्री का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- रागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग रागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 राग रागेश्री

1.3.1 रागेश्री राग का परिचय

राग - रागेश्री

थाट - खमाज

जाति - औडव षाडव

वादी - गंधार

संवादी – निषाद

स्वर - निषाद कोमल (नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम, अवरोह में पंचम

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - बागेश्री

आरोह – ऩी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म ग म रे सा

पकड़ – ध़ ऩी सा म, ग म रे सा

रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। रागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग, म ध, ऩी सा ग, म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे गंधार पर आते हैं। जैसे-ऩी सा ग, ग म रे सा।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा ग, ग म ध नी ध तथा म ग म रे सा है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ग म रे सा की संगति प्रयुक्त होती है। रागेश्री राग का आरम्भ ऩी सा ग से अधिकतर किया जाता है।

इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

1.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,
- ध़ ऩी सा ग- म ग म रे सा

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा

- ध़ ऩी सा ग – ग म,

  ग म ग म रे सा,

  ग म ग – ग म ध – म ग,

  ग म रे सा

- म ग म ध, ध म – ध नी ध म ग,

  ग म ध नी नी सां, सां

- सां – गं गं रें सां -,

  ध नी नी सां,

  गं मं रें सां सां,

- सां नी ध नी ध – म, ग – म रे सा,

  ध़ ऩी ऩी सा ग- ग- म रे सा, सा

1.3.3 रागेश्री राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल

राग: रागेश्री **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थाई

अब तो आवो रसिया
मन बसिया रोए नैना
कैसे कटे यी रैना

अंतरा

ना जानूं बालम क्यूं बिसराए
हमरी पीर ना जाने
रोए नैना

स्थाई

	10 साग मध अब तो
11 ग-रेगम रे आ----वो	12 नीसा रसि
1 मरे-मरेसा-- या-----	2 रेनीसा नीध म - - न -
3 धनीसाग- बसिया--	4 गमरेगमगम रो- ए ----
5 रेसारेसा सा नै ---- ना	6 साग मध कै - से -

7 नीध मगग- क- टे---	8 ग रेगम ये ---
9 रे- ऩीरेसा मरेसा सा रै- ---- --- ना	

अंतरा

11 ग म ना -	12 ध नी जा नूं
1 सांसांसां- बा ल म -	2 धनीसांगंमं क्यूं ----
3 रेंसां रेंसासांनी- धध बिस रा - - - - - ये	4 नीधममग हमरी--
5 म म पी र	6 म ना
7 सागमधनीरेंसांसांनी ध जा - - - - - - - - - -	8 -ममग सासांनीनीध- ममग - - - - - - - - - - - - - -ने
9 ग रेगम रो ए --	10 रे-ऩी रेसा मरेसा सा नै- - -- - - - ना

1.3.4 रागेश्री की तानें

- सा़नीध़नी सागमध नीनीधम गमरेसा
- सा़नीध़नी सागमध नीसांनीध मपध-

  सांनीधम धनीधम गमरेसा
- मधनीसां धनीसानी धमगग गमरेसा

  गमधनी सां-गम धनीसां- गमधनी
- ध़नीसानी सा-ध़नी सानीसा- ध़नीसानी
- सानीधनी रेसानीसा गमरेसा धमगम

  नीधसांनी धमगम गमरेसा
- गमरेसा गरेसानी रेसानीध सानीधनी

  सासानीसा गगसाग ममगम धधमध

  नीनीधनी सांसांनीसां गंमंरेंसां नीधसांनी

  धनीधम गमधनी सांनीधम धमनीसां
- सानीधनी रेसानीध गमरेसा धमगम

  नीधनीध सांनीसांनी रेंसांरेंसां नीधनीध

  सासाधनी धमगम रेरेसासा गमधनी
- नीसागग सागमम गमधध मधनीनी

धनीसांसां	नीसांगंगं	रेंसांनीसां	धनीधम
गमरेसा	गमरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी
सां---	गमरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी
सां---	गमरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी

- ध़ध़ध़ध़ ऩीऩीऩीऩी

  सासासासा ऩीनी़नी़नी़

  सासासासा रेंरेंरेंरे

  सासासासा गगगग

  सासासासा गगगग

  ममम्म गगगग

  ममम्म धधधध

  ममम्म धधधध

  नीनीनीनी ममम्म

  धधधध नीनीनीनी

  सांसांसांसां गंगंगंगं

  मंमंमंमं रेंरेंरेंरें

  सांसांसांसां नीनीनीनी

  धधधध ममम्म

धधधध नीनीनीनी

धधधध मममम

गगगग मममम

रेरेरेरे सासासासा

ऩीऩीऩीनी़ सासासासा

ऩीऩीऩीनी़ सासासासा

ऩीऩीऩीनी़ सासासासा

- ध़ध़ध़ध़ ध़ध़ध़ध़ ऩीऩीऩीनी़ ऩीऩीऩीनी़

  सासासासा सासासासा ऩीनी़नी़नी़ ऩीनी़नी़नी़

  सासासासा सासासासा रेरेरेरे रेरेरेरे

  सासासासा सासासासा गगगग गगगग

  सासासासा सासासासा गगगग गगगग

  मममम मममम गगगग गगगग

  मममम मममम धधधध धधधध

  मममम मममम धधधध धधधध

  नीनीनीनी नीनीनीनी मममम मममम

  धधधध धधधध नीनीनीनी नीनीनीनी

  सांसांसांसां सांसांसांसां गंगंगंगं गंगंगंगं

मंमंमंमं मंमंमंमं	रेंरेंरेंरें रेंरेंरेंरें
सांसांसांसां सांसांसांसां	नीनीनीनी नीनीनीनी
धधधध धधधध	मममम मममम
धधधध धधधध	नीनीनीनी नीनीनीनी
धधधध धधधध	मममम मममम
गगगग गगगग	मममम मममम
रेरेरेरे रेरेरेरे	सासासासा सासासासा
ऩीऩीऩीऩी ऩीऩीऩीऩी	सासासासा सासासासा
ऩीऩीऩीऩी ऩीऩीऩीऩी	सासासासा सासासासा
ऩीऩीऩीऩी ऩीऩीऩीऩी	सासासासा सासासासा

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 रागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) ग

घ) सा

1.2 रागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

1.3 रागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म ग म रे

घ) नि सां नी ध म ग रे

1.4 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

1.5 रागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) नी

घ) ध

1.6 रागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) प

घ) म

1.7 रागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

1.8 रागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) निषाद

1.9 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

1.10 रागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

1.4 सारांश

रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। रागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

1.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: क)

1.2 उत्तर: ख)

1.3 उत्तर: ग)

1.4 उत्तर: घ)

1.5 उत्तर: क)

1.6 उत्तर: ख)

1.7 उत्तर: ग)

1.8 उत्तर: घ)

1.9 उत्तर: क)

1.10 उत्तर: ख)

1.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग रागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग रागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग रागेश्री के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग रागेश्री में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-2
भैरवी राग का विलंबित ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
2.1		भूमिका
2.2		उद्देश्य तथा परिणाम
2.3		राग भैरवी
	2.3.1	भैरवी राग का परिचय
	2.3.2	भैरवी राग का आलाप
	2.3.3	भैरवी राग का विलंबित ख्याल
	2.3.4	भैरवी राग की तानें
		स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4		सारांश
2.5		शब्दावली
2.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7		संदर्भ
2.8		अनुशंसित पठन
2.9		पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग भैरवी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग भैरवी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 राग भैरवी

2.3.1 भैरवी राग का परिचय

रे ग ध नि कोमल राखत, मानत माध्यम वादी।

प्रातः समय जाति, सोहट सा संवादी।।

राग- भैरवी

थाट- भैरवी

जाति-सम्पूर्ण- सम्पूर्ण।

वादी- म

सम्वादी- सा

स्वर- रे, ग, ध, नि कोमल।

न्यास के स्वर- सा, ग, म, प।

गायन वादन समय- प्रातः काल

समप्रकृतिक राग- बिलासखानी तोड़ी।

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़- म ग़ रे़ ग़, सा रे़ सा, ग़ म प ध़ प, म ग़ रे़ सा।

शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे़, ग़, ध़, नि़ कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

शुद्ध रे और शुद्ध ध का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि अगर किसी साधारण गायक या वादक को भैरवी मे शुद्ध रे और ध का प्रयोग करने के लिए मना कर दिया जाए तो उसे भैरवी गाना कुछ मुश्किल हो जाएगा। यह गंभीर प्रकृति का राग नहीं है। अतः इसमें छोटा ख्याल, तराना तथा टप्पा- ठुमरी गाई- बजाई जाती है। किन्तु फिल्म संगीत मे इस राग के स्वरों का प्रयोग अधिक होने लगा है।

2.3.2 भैरवी राग का आलाप

- सा रे़ सा, ध़ नि़ सा, ग़ रे़ सा,

  नि़ ध़ प,

  प ध़ नि़ सा रे सा।

- सा रे़ ग़ ऽ रे़ ग़ सा, प ध़ प,

  म प ग़, सा रे़ ग़ म प ऽ ध़ प म

  प ग़ म ग़, सा ग़ प ऽ म, प ऽ

  ग़ म ग़ ऽ रे़ सा, ध़ नि़ सा ग़ रे सा।

- नि़ सा ग़ म प ऽ ध़ प,

  ग़ म प ध़ प,

नि ध प, प ध नि ऽ

ध नि ऽ प ध प,

म प नि ध प, सा ऽ प प ध

प म प म ग,

सा रे ग म ग,

सा रे सा, ध नि सा रे सा।

- ग म ध नि सां, रें सां गं रें सां,

सां रें गं सां रें मं गं सां रें सां,

नि सां नि सां रें सां ध प,

नि ध प प ऽ प ध ऽऽ प,

ध म प म ग, सा ग म प,

म ग सा रे सा, ध नि ध सा,

रे सा ग रे सा।

2.3.3 भैरवी राग विलंबित ख्याल

राग: भैरवी **ताल: चौताल** **लय: विलम्बित लय**

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थाई											
सा ग	-	ग	सा	रे	म	रे ग	ग	रे	सा	-	सा
भ	ऽ	स्म	अं	ऽ	ग	गौ	ऽ	री	सं	ऽ	ग
नी सां	रे	नी	सा	-	रे	ग	-	ग	ग म	-	म
ज	टा	ऽ	में	ऽ	बि	रा	ऽ	जे	गं	ऽ	ग
ग म	-	ध	प	-	प नी	ध	प	म	प	-	म
चं	ऽ	द्र	मा	ऽ	ल	ला	ऽ	ट	ध	ऽ	रे
सा	सा	रे	ग	-	म	ग रे	-	ग	रे	सा	-
अ	धि	ऽ	क	ऽ	सु	हा	ऽ	ऽ	यो	है	ऽ
अंतरा											
प ध	-	ध	म	ध	नी	सां	रें	सां	सां	-	सां
घो	ऽ	ट	त	भं	ग	च	ढ	त	रं	ऽ	ग
सां नी	-	सां	सां	सां गं	-	रें	-	सां	नी ध	-	प
रुं	ऽ	ड	न	की	ऽ	मा	ऽ	ल	ग्री	ऽ	व
प	प	प	-	नी ध	सां	नी ध	नी ध	पम	प	म	म
ध	तू	रा	ऽ	अ	र	धां	ऽ	गिऽ	से	ऽ	त
म सा	-	रे	ग	-	म	ग रे	-	ग	रे	सा	-
पु	ऽ	ज	न	ऽ	च	ढा	ऽ	ऽ	यो	है	ऽ

2.3.4 भैरवी की तानें

- सारेगम गरेसारे

  गमपम गरेसाऽ

- गमपम पमगम

  गरेसारे गरेसाऽ

- सारेगम मपगम

  पमगम गरेसाऽ

- सारेगम गरेसाऩी

  धपधऩी साऩीसाऽ

- ऩीसागम पऽमप

  गमपम गरेसाऽ

- सारेसारे गरेसारे

- ऩीसाऩीसा रेसासाऽ

- सारें गरें सांनिधनि

  सांनिधप मगरेसा

- निसागम पध पम

  गमपध निध पम

- गमपध निसांरेंसां

  सांनिधप मग रेसा

- सारेरेग गममप

  पधधनी नीसांसारें

  सांनीनीध धपपम

  मगगरे रेसासाऽ

- सारेगम पधमप

  गमगरे गगरेसा

- सारेगरे गमगम

  पमगरे गगरेसा

- सांनीधनी धपमप

  गमगरे गगरेसा

- ध़नीसारे सानी सारे

  गगरेग मपधप

- पमगम गरेगग

  रेसारेग रेसानीसा

- गमधप मप गम

गरेसारे	नीसारेग
सारेगम	पधपम
पगमरे	गग रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) ग

2.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) प

2.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) प्रातः काल

घ) दोपहर

2.4 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

2.5 भैरवी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) प

ग) म

घ) सा

2.6 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) तोड़ी

ख) भैरवी

ग) भैरव

घ) आसावरी

2.7 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ग म प ध प, म ग रे सा।

ग) ग म प ध प, म ग रे सा।

घ) ध नि सां नी ध म ग

2.8 भैरवी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

2.9 भैरवी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

2.10 भैरवी राग, भैरव तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

2.4 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन-वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे, ग, ध, नि कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

2.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ख)

2.3 उत्तर: ग)

2.4 उत्तर: घ)

2.5 उत्तर: क)

2.6 उत्तर: ख)

2.7 उत्तर: ग)

2.8 उत्तर: घ)

2.9 उत्तर: क)

2.10 उत्तर: ख)

2.7 संदर्भ

मेहरोत्रा, नरेन्द्र मोहन (1977). ठुमरी संग्रह. उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरवी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-3
यमन राग का विलंबित ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
3.1		भूमिका
3.2		उद्देश्य तथा परिणाम
3.3		राग यमन
	3.3.1	यमन राग का परिचय
	3.3.2	यमन राग का आलाप
	3.3.3	यमन राग का विलंबित ख्याल
	3.3.4	यमन राग की तानें
		स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4		सारांश
3.5		शब्दावली
3.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7		संदर्भ
3.8		अनुशंसित पठन
3.9		पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग यमन का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- यमन राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- यमन राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 राग यमन

3.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र म'

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, म' प, म' ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म' ध प' म ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग म' प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

यह कल्याण थाटका आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म॑) का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म॑ प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है।

इसी प्रकार यमन राग का उत्तरांग भी है। यद्यपि आरोह में पंचम स्वर वर्जित नहीं है, फिर भी यहां पर म॑ ध प, म॑ ध नि सां, ग म॑ ध नि सां, नि ध प, म॑ ध प का प्रयोग होता है। अगर पंचम से आगे बढ़ना हो तो पंचम का लंघन किया जाता है तथा म॑ ध नि किया जाता है।यमन राग का अवरोह सीधा है सां नि ध प, म॑ ग रे सा परन्तु कभी कभी प, म॑रे ग रे, नि॒ रे सा भी किया जाता है। यह स्वर समुदाय राग वाचक माना जाता है। विशेष रूप से आलाप में यह स्वर संगति प्रमुखता से प्रयुक्त होती है। द्रुत लय में सां नि ध प, म॑ ध प, म॑ प ग म॑ ग रे सा सीधे स्वर लिए जाते हैं।

गंधार तथा निषाद स्वरों का प्रयोग अधिक रहता है। इन दोनों स्वरों पर न्यास किया जाता है। इसके साथ-साथ पंचम स्वर पर भी न्यास किया जाता है, रिषभ, मध्यम तथा धैवत स्वरों का प्रयोग सामान्य है अर्थात इन पर न्यास नहीं होता है। इन स्वरों का प्रयोग आरोह अवरोह में सदैव होता है पर इन पर न्यास नहीं किया जाता है, जैसे- नि॒ रे ग, नि॒ ध़ नि॒ रे ग रे नि॒ रे सा, नि॒ रे ग म॑ प, म॑ ध प, म॑ ध नि ध प, म॑ प ग म॑ ग रे नि॒ रे सा।

यमन राग का समप्रकृतिक राग "यमन-कल्याण" के नाम से जाना जाता है। यमन-कल्याण राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है, जैसे- प म॑ ग म ग रे सा, नि रे ग म॑ प म॑ ग म ग रे सा, अर्थात् शुद्ध मध्यम दोनों तरफ से गंधार से घिरा रहता है। दूसरी ओर यमन में के वल तीव्र मध्यम का ही प्रयोग होता है।राग यमन एक अत्यन्त ही लोकप्रिय राग है। आधुनिक समय में इसकी शिक्षा प्रारम्भ में ही दे दी जाती है। इस राग में ध्रुवपद, ख्याल, गत शैली की अनेक रचनाएं सुनने को मिलती हैं। गीत, गज़ल भजन, फिल्मी गीतों में इस राग की सुन्दर-सुन्दर रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

3.3.2 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा,

  ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ ध़ प़,

  म़ ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़ ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे, ग म़ म़ प, प, म़ ग,

  रे ग म़, म़ ग रे सा

- ग म़ प, प, म़ ध प, प, म़ ध

  नी नी ध प, प, म़ ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं मं पं, पं, मं गं,

  रें मं गं, मं गं रें सां

- रें नी ध प, प, म़ ध प म़ ग,

  रे म़ ग रे ऩी रे सा।

3.3.3 यमन राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल

राग: यमन **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थायी

मेरो मन बांध लीनो

हारे इन जोगियां के साथ

अंतरा

सदारंग करम करो क्यों ना

इन प्राण नाथ के हाथ

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
								ऩी	प़	ऩीध़	ऩीरे
								मे	रो	ऽऽ	मन
सा	सा	ऩी	रे	ग	ग	रे	(सा)				
बो	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ली	नो				
								नी	प	रे	मंमं
								हा	रे	ऽ	इन
प	(प)	ग	रे	ध़	ऩी	सा	सा				
जो	गी	यां	के	सा	ऽ	ऽ	थ				

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
								मं॑ग	मं॑ध	मं॑धनीसां	ऽसां
								सऽ	दाऽ	रंऽऽऽ	ऽग
नी	प	मं॑प	गप	ग	रे	ऩीरें	ऽसा				
क	र	मऽ	कऽ	रो	ऽ	क्यों	ऽन				
								ऩी	रे	ग	मं॑ध
								इ	न	प्रा	ऽऽ
नी	(प)	मं॑ग	प	ग	रे	ऩीरे	सा				
ण	ना	ऽऽ	ध	के	ऽ	हाऽ	थ				

3.3.4 यमन की तानें

- ऩीरेगमं॑धनीसारें सांनीधपमं॑गरेसा

  ऩीरेगमं॑पमं॑गरे गमं॑पमं॑गरेसा-

  पमं॑गमं॑पधपमं॑ गमं॑पमं॑गरेसा-

- गगरेसाऩीरेगमं॑ पधपमं॑गरेसा-

  नीनीधपमं॑धनीसां नीधपमं॑गरेसा

  पमं॑गरेगमं॑पध नीधपमं॑धनीसां

गंगरेंसांनींरेंगरें सांनीधपमंगरेसा

- ऩिरे गरेऩिरे सासा पमं गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गमं गमं पमं गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे पध पमं
  गमं पमं गरे सा-
- ऩिरे गमं धनि सांनि
  धप मंग रेरे ऩिसा
- गमं धनि रेंगं रेंसां
  निध पमं गरे साऽ
- सांनि धप मंग रेसा
  ऩिरे गमं धनि सांऽ
- ऩिरे गरे गमं गमं
  धमं धनि धनि सांऽ
- निरें गरें सारें सांनि
  धप मंध निरें सांऽ
- गग रेसा ऩीसारेसा
  ऩीऩी ध़प़ म़ंप़ ध़प़

म़॑ध़ ऩीरे	सासा ऩीसा
नीरे गम॑	पम॑ गम
गम॑ धनी	सांनीधप
म॑ध नीरें	गरें सांसां
नीरें सांनी	धप म॑प
म॑ध पम॑	गरे सासा
ऩीरे गम॑	पम॑ गरे
साऽ पम॑	गरे साऽ
पम॑ गरे	साऽ ऩीरे
गम॑ पम॑	गरे साऽ
पम॑ गरे	साऽ पम॑
गरे साऽ	ऩीरे गम॑
पम॑ गरे	साऽ पम॑
गरे साऽ	पम॑ गरे

- ऩिरे गरे — ग- ऩिरे

गरे ग- — ऩिरे गरे

- ऩिरे गरे — ग- ग-

ग- -- — ऩिरे गरे

ग- ग- ग- --

नि़रे गरे ग- ग-

- नि़ध़ नि़रे गरे नि़रे

ग- -- नि़ध़ ऩीरे

गरे नि़रे ग- --

नि़ध़ नि़रे गरे नि़रे

- सांनि धप मंग रेसा

नि़रे गरे ग- सांनि

धप मंग रेसा नि़रे

गरे ग- सांनि धप

मंग रेसा नि़रे गरे

- नि़सा रेनि़ सारे नि़सा

मंप धमं पध मंप

निसां रेंनि सारें नि़सां

गंगं रेंसां निसां रेंसां

- निनि धप मंप धप

मंप गमं गरे सा-

नि़रे गरे ग- नि़रे

गरे ग- ऩिरे गरे

- गग रेसा ऩिसा रेसा

ऩिऩि ध़प़ म़ंप़ ध़प़

म़ंध़ ऩिरे सासा ऩिसा

ऩिरे गमं पमं गमं

- मंध निरें सांसां निसां

गरें सारें धनि धप

धप मंप मंग मंग

रेग रेसा ऩिरे गमं

पमं गमं ग- --

ऩिरे गमं पमं गमं

ग- -- ऩिरे गमं

पमं गमं

- ऩिरे सासा ऩिरे गरे

सासा ऩिरे गमं गरे

सासा ऩिरे गमं पमं

गमं गरे सासा ऩिरे

गमं धप मंप गमं

गरे सासा	ऩिरे गमं
धनि रेंसां	सांनि धनि
धप मंप	मंप मंग
रेसा ऩिसा	ऩिरे ग-
ऩिरे ग-	ऩिरे सा सा

- नी़रेगगरेगमंमं गमंपप मंपधध

पधनीनी धनीसांसां	नीधपमंगरेसा-
ऩीरेगमंपधनीसां	रेंगंमंगंरेंसांनीध
पमंगमंमंधनीसां	नीधपमंगरेसा

- म़म़म़,ध़ ध़ध़,ऩीऩी, ध़ध़ध़,ऩी ऩीऩी,सासा,

ऩीऩीऩी,सा	सासा,रेरे,	सासासा,रे	रेरे,गग,
रेरेरे,ग	गग,मंमं,	गगग,मं	मंमं,पप,
मंमंमं,प	पप,धध,	मंमंमं,ध	धध,नीनी,
धधध,नी	नीनी,सांसां,	नीनीनी,सां	सांसा,रेंरें,
सांसांसां,नी	नीनी,धध	ध,पपप,	मंम,मंग
गग,रेरे	रे,सासासा,	ऩीरेगमं	पऽऽऽ
ऽऽऩीरे	गमंपऽ	ऽऽऽऽ	ऩीरेगमं

- सा ऩिऩि ध़ध़ प़प़ म़ध़ध़ ऩि सा ऩि रेरे गग मंमं गऽ गरे ऽरे साऽ

ऩि रेरे ग म॑   रे गग म॑ ध   प म॑म॑ गग म॑म॑   गऽ गरे ऽरे साऽ

ऩि रे सा ऽ   ऩि रे सा ऽ   ऩि रे सा ऽ

- ऩी रेरे ग म॑   रे गग म॑ ध   ग म॑म॑ ध नी   म॑ धध नी सां

  ध नीनी रें सां   नीऽ नीध ऽध पऽ   म॑ धध पप म॑म॑   गऽ गरे ऽरे साऽ

  ग म॑म॑ ग रे   सा ऽ ऽ ऽ   ग म॑म॑ ग रे   सा ऽ ऽ ऽ

  ग म॑म॑ ग रे

- गगरेसाऩीसारेसा   ऩीऩीधऩपम॑ऩधऩ   म॑ऩधऩीरेसासाऩीसा

  नीरेगम॑पम॑गम॑   गम॑धनीसांनीधप   म॑धनीरेंगरेंसांसां

  नीरेंसांनीधपम॑प   म॑धपम॑गरेसासा   ऩीरेगम॑पम॑गरे

  साऽपम॑गरेसाऽ   पम॑गरेसाऽऩीरे   गम॑पम॑गरेसाऽ

  पम॑गरेसाऽपम॑   गरेसाऽऩीरेगम॑   पम॑गरेसाऽपम॑

  गरेसाऽपम॑गरे

- आलाप

1	सा	ऩी रे		ग		रे	ऩी रे		सा
2	ऩी रे	ग	म॑	ग रे	ऩी	रे	सा		
3	ऩी रे ग म॑		प	प	पम॑गरे	ऩी रे	सा		
4	गम॑ ध		नी	म॑ध	नी	धप	रेग- रे	सा	

5	ग मं ध	नी	नी	सां	सां	नी रें गं	रें	सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) प

3.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) ग

घ) सा

3.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम पहर

घ) दोपहर

3.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

3.5 यमन राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) ध नि ध प, मं ग

ख) ध सां नि ध प, मं ग

ग) ध नि ध प म॑ प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म॑ ग

3.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) काफी

ख) कल्याण

ग) भैरव

घ) तोड़ी

3.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म॑ ग रे सा

ख) ग म॑ रे सा

ग) म॑ ग रे सा

घ) ग म॑ रे सा

3.8 यमन राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

3.9 यमन राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

3.10 यमन राग, कल्याण तथा यमनी रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

3.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म॑) का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म॑ प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है।शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

3.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: क)

3.2 उत्तर: ख)

3.3 उत्तर: ग)

3.4 उत्तर: घ)

3.5 उत्तर: क)

3.6 उत्तर: ख)

3.7 उत्तर: ग)

3.8 उत्तर: घ)

3.9 उत्तर: क)

3.10 उत्तर: ख)

3.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-4
रागेश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
4.1		भूमिका
4.2		उद्देश्य तथा परिणाम
4.3		राग रागेश्री
	4.3.1	रागेश्री राग का परिचय
	4.3.2	रागेश्री राग का आलाप
	4.3.3	रागेश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
	4.3.4	रागेश्री राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4		सारांश
4.5		शब्दावली
4.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7		संदर्भ
4.8		अनुशंसित पठन
4.9		पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग रागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग रागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग रागेश्री का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- रागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- रागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग रागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 राग रागेश्री

4.3.1 रागेश्री राग का परिचय

राग - रागेश्री

थाट - खमाज

जाति - औडव षाडव

वादी - गंधार

संवादी – निषाद

स्वर - निषाद कोमल (नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम, अवरोह में पंचम

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - बागेश्री

आरोह – नी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म ग म रे सा

पकड़ – ध़ ऩी सा म, ग म रे सा

रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है।

रागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग, म ध, ऩी सा ग, म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे गंधार पर आते हैं। जैसे-ऩी सा ग, ग म रे सा।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा ग, ग म ध नी ध तथा म ग म रे सा है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ग म रे सा की संगति प्रयुक्त होती है। रागेश्री राग का आरम्भ ऩी सा ग से अधिकतर किया जाता है।

इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

4.3.2 आलाप

- सा, नी़ सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,

- ध़ ऩी सा ग- म ग म रे सा
- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा
- ध़ ऩी सा ग – ग म,

  ग म ग म रे सा,

  ग म ग – ग म ध – म ग, ग म रे सा
- म ग म ध, ध म – ध नी ध म ग,

  ग म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

  गं मं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध – म, ग – म रे सा,
- ध़ ऩी ऩी सा ग- ग- म रे सा, सा

4.3.3 रागेश्री राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: रागेश्री **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											ऩीसागम	रे	सासा	ऩीसा	ध़ऩी
											दिरदिर	दा	दिर	दा	दिर
सा	सा	सा	गम	ध	मध	नी	ध	गम	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अन्तरा															
											मम	ग	मम	ध	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	सांसां	नी	सांसां	रें	सां	ध	नीनी	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	रा					
											गंगं	मं	रें	सां	नीसां
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
नी	सांसां	नी	धनी	ध	नीध	म	गम	रे	ऩीऩी	सा					
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					

4.3.4 रागेश्री राग के तोड़े

• साऩीध़ऩी	सागमध	नीनीधम	गमरेसा
• साऩीध़ऩी	सागमध	नीसांनीध	मपध-
सांनीधम	धनीधम	गमरेसा	
• मधनीसां	धनीसानी	धमगग	गमरेसा
गमधनी	सां-गम	धनीसां-	गमधनी
• ध़ऩीसाऩी	सा-ध़ऩी	साऩीसा-	ध़ऩीसाऩी
• साऩीधऩी	रेसाऩीसा	गमरेसा	धमगम
नीधसांनी	धमगम	गमरेसा	
• गमरेसा	गरेसाऩी	रेसाऩीध़	साऩीध़नी़
सासाऩीसा	गगसाग	ममगम	धधमध
नीनीधनी	सांसांनीसां	गंमंरेंसां	नीधसांनी
धनीधम	गमधनी	सांनीधम	धमनीसां
• साऩीध़ऩी	रेसाऩीध़	गमरेसा	धमगम
नीधनीध	सांनीसांनी	रेंसांरेंसां	नीधनीध
सासाधनी	धमगम	रेरेसासा	गमधनी
• ऩीसागग	सागमम	गमधध	मधनीनी

धनीसांसां	नीसांगंगं	रेंसांनीसां	धनीधम
गमरेसा	गमरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी
सां---	गमरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी
सां---	गमरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी

- ध़ध़ध़ध़ ऩीऩीऩीऩी सासासासा ऩीनी़नी़नी़
  सासासासा रेरेरेरे सासासासा गगगग
  सासासासा गगगग ममममम गगगग
  ममममम धधधध ममममम धधधध
  नीनीनीनी ममममम धधधध नीनीनीनी
  सांसांसांसां गंगंगंगं मंमंमंमं रेंरेंरेंरें
  सांसांसांसां नीनीनीनी धधधध मममम
  धधधध नीनीनीनी धधधध ममममम
  गगगग ममममम रेरेरेरे सासासासा
  ऩीऩीऩीनी़ सासासासा ऩीऩीऩीनी़ सासासासा
  ऩीऩीऩीनी़ सासासासा

- ध़ध़ध़ध़ ध़ध़धध़ ऩीऩीऩीऩी ऩीऩीऩीऩी
  सासासासा सासासासा ऩीनी़नी़नी़ ऩीनी़नी़नी़
  सासासासा सासासासा रेरेरेरे रेरेरेरे

सासासासा सासासासा

सासासासा सासासासा

मममम मममम

मममम मममम

मममम मममम

नीनीनीनी नीनीनीनी

धधधध धधधध

सांसांसांसां सांसांसांसां

मंमंमंमं मंमंमंमं

सांसांसांसां सांसांसांसां

धधधध धधधध

धधधध धधधध

धधधध धधधध

गगगग गगगग

रेरेरेरे रेरेरेरे

ऩीऩीऩीनी ऩीऩीऩीनी

ऩीऩीऩीनी ऩीऩीऩीनी

ऩीऩीऩीनी ऩीऩीऩीनी

गगगग गगगग

गगगग गगगग

गगगग गगगग

धधधध धधधध

धधधध धधधध

मममम मममम

नीनीनीनी नीनीनीनी

गंगंगंगं गंगंगंगं

रेंरेंरेंरें रेंरेंरेंरें

नीनीनीनी नीनीनीनी

मममम मममम

नीनीनीनी नीनीनीनी

मममम मममम

मममम मममम

सासासासा सासासासा

सासासासा सासासासा

सासासासा सासासासा

सासासासा सासासासा

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 रागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

4.2 रागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

4.3 रागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

4.4 रागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

4.5 रागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

4.6 रागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

4.7 रागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

4.8 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

4.9 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

4.10 रागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

4.4 सारांश

रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। रागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

4.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: क)

4.2 उत्तर: ख)

4.3 उत्तर: ग)

4.4 उत्तर: घ)

4.5 उत्तर: क)

4.6 उत्तर: ख)

4.7 उत्तर: ग)

4.8 उत्तर: घ)

4.9 उत्तर: क)

4.10 उत्तर: ख)

4.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (4998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 4-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग रागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग रागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग रागेश्री की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग रागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-5
भैरवी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
5.1		भूमिका
5.2		उद्देश्य तथा परिणाम
5.3		राग भैरवी
	5.3.1	भैरवी राग का परिचय
	5.3.2	भैरवी राग का आलाप
	5.3.3	भैरवी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
	5.3.4	भैरवी राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4		सारांश
5.5		शब्दावली
5.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7		संदर्भ
5.8		अनुशंसित पठन
5.9		पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग भैरवी का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भैरवी राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 राग भैरवी

5.3.1 भैरवी राग का परिचय

रे ग ध नि कोमल राखत, मानत माध्यम वादी।

प्रातः समय जाति, सोहट सा संवादी।।

राग- भैरवी

थाट- भैरवी

जाति-सम्पूर्ण- सम्पूर्ण।

वादी- म

सम्वादी- सा

स्वर- रे, ग, ध, नि कोमल।

न्यास के स्वर- सा, ग, म, प।

गायन वादन समय- प्रातः काल

समप्रकृतिक राग- बिलासखानी तोड़ी।

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे, ग, ध, नि कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

शुद्ध रे और शुद्ध ध का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि अगर किसी साधारण गायक या वादक को भैरवी मे शुद्ध रे और ध का प्रयोग करने के लिए मना कर दिया जाए तो उसे भैरवी गाना कुछ मुश्किल हो जाएगा। यह गंभीर प्रकृति का राग नहीं है। अतः इसमें छोटा ख्याल, तराना तथा टप्पा- ठुमरी गाई- बजाई जाती है। किन्तु फिल्म संगीत मे इस राग के स्वरों का प्रयोग अधिक होने लगा है।

5.3.2 भैरवी राग का आलाप

- सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा,

  नि ध प, प ध नि सा रे सा।

- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प,

  म प ग, सा रे ग म प ऽ

  ध प म प ग म ग, सा ग प ऽ म,

  प ऽ ग म ग ऽ रे सा,

  ध नि सा ग रे सा।

- नि सा ग म प ऽ ध प,

  ग म प ध प, नि ध प,

प ध़ नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ प ध़ प,

म प नि़ ध़ प,

सा ऽ प प ध़ प म प म ग़,

सा रे़ ग़ म ग़, सा रे़ सा,

ध़ नि़ सा रे़ सा।

- ग़ म ध़ नि़ सां, रें़ सां ग़ं रें़ सां,

सां रें़ ग़ं सां रें़ मं ग़ं सां रें़ सां,

नि़ सां नि़ सां रें़ सां ध़ प,

नि़ ध़ प प ऽ प ध़ ऽऽ प,

ध़ म प म ग़, सा ग़ म प,

म ग़ सा रे़ सा, ध़ नि़ ध़ सा,

रे़ सा ग़ रे़ सा।।

5.3.3 भैरवी राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: भैरवी **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				**2**				**0**				**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
											सारे	नी	सासा	ग	मम
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
प	प	प	धनी	ध	पम	ग	म	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											सारे	नी	सासा	रे	सा
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नी	ध	प	धनी	ध	पम	ग	म	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	गम	मम	ध	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	सारें	नी	सांसां	रें	सां	ध	ध	प					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											पप	प	गंगं	रें	सां
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	ध	प	धनी	ध	पम	ग	म	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

5.3.4 भैरवी राग के तोड़े

- सारेगम | गरेसारे
  गमपम | गरेसाऽ
- गमपम | पमगम
  गरेसारे | गरेसाऽ
- सारेगम | मपगम
  पमगम | गरेसाऽ
- सारेगम | गरेसाऩी
  धपधऩी | साऩीसाऽ
- ऩीसागम | पऽमप
  गमपम | गरेसाऽ
- सारेसारे | गरेसारे
- ऩीसाऩीसा | रेसासाऽ
- सांरें गंरें | सांनिधनि
  सांनिधप | मगरेसा
- निसागम | पध पम
  गमपध | निध पम

- गमपध निसांरेंसां

  सांनिधप मग रेसा

- सारेरेग गममप

  पधधनी नीसांसारें

  सांनीनीध धपपम

  मगगरे रेसासाऽ

- सारेगम पधमप

  गमगरे गगरेसा

- सारेगरे गमगम

  पमगरे गगरेसा

- सांनीधनी धपमप

  गमगरे गगरेसा

- ध़नीसारे सानी सारे

  गगरेग मपधप

- पमगम गरेगग

  रेसारेग रेसानीसा

- गमधप मप गम

गरेसारे ऩीसारेग

सारेगम पधपम

पगमरे गग रेसा

- सारे सारे गग रेग

  रेग मम गमगम

  पप मप मप धध

  पध पध नीनी धनी

  धनी सांसां नीनी पम

  गरे सासा

- सारे गग रेग मम

  गम पप मप धध

  पध नीनी धनी सांसां

  गंगं रेरें सांसां नीनी

  धध पप मम गग

  रेरे सासा

- ध़्धध़्ध ऩीऩीऩीऩी

  सासासासा ऩीनी़नी़नी़

  सासासासा रेरेरेरे

सासासासा	रेरेरेरे
गगगग	गगगग
मममम	गगगग
मममम	पपपप
मममम	पपपप
धधधध	पपपप
धधधध	नीनीनीनी
सांसांसांसां	रेंरेंरेंरें
गंगंगंगं	मंमंमंमं
गंगंगंगं	रेंरेंरेंरें
सांसांसांसां	नीनीनीनी
धधधध	पपपप
धधधध	नीनीनीनी
धधधध	मममम
पपपप	मममम
गगगग	रेरेरेरे
सासासासा	ऩीऩीऩीनी़
सासासासा	ऩीऩीऩीनी़

सासासासा ऩीऩीऩीनी़

- ध़ध़ध़ध़ ध़ध़ध़ध़ ऩीऩीऩीऩी ऩीऩीऩीऩी

  सासासासा सासासासा ऩीनी़नी़नी़ ऩीनी़नी़नी़

  सासासासा सासासासा रेरेरेरे रेरेरेरे

  सासासासा सासासासा रेरेरेरे रेरेरेरे

  गगगग गगगग गगगग गगगग

  मममम मममम गगगग गगगग

  मममम मममम पपपप पपपप

  मममम मममम पपपप पपपप

  धधधध धधधध नीनीनीनी नीनीनीनी

  सांसांसांसां सांसांसांसां रेंरेंरेंरें रेंरेंरेंरें

  गंगंगंगं गंगंगंगं मंमंमंमं मंमंमंमं

  गंगंगंगं गंगंगंगं रेंरेंरेंरें रेंरेंरेंरें

  सांसांसांसां सांसांसांसां नीनीनीनी नीनीनीनी

  धधधध धधधध पपपप पपपप

  मममम मममम धधधध धधधध

  पपपप पपपप नीनीनीनी नीनीनीनी

  धधधध धधधध पपपप पपपप

ममम ममम	गगगग गगगग
रेरेरेरे रेरेरेरे	सासासासा सासासासा
ऩीऩीऩीनी ऩीऩीऩीनी	सासासासा सांसांसांसां
ऩीऩीऩीनी ऩीऩीऩीनी	सासासासा सांसांसांसां
ऩीऩीऩीनी ऩीऩीऩीनी	सासासासा सांसांसांसां

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) ग

5.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) प

5.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) प्रातः काल

घ) दोपहर

5.4 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

5.5 भैरवी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) प

ग) म

घ) सा

5.6 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) तोड़ी

ख) भैरवी

ग) भैरव

घ) आसावरी

5.7 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ग म प ध प, म ग रे सा।

ग) ग म प ध प, म ग रे सा।

घ) ध नि सां नी ध म ग

5.8 भैरवी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

5.9 भैरवी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

5.10 भैरवी राग, भैरव तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

5.4 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन-वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे, ग, ध, नि कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तोडों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: क)

5.2 उत्तर: ख)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: घ)

5.5 उत्तर: क)

5.6 उत्तर: ख)

5.7 उत्तर: ग)

5.8 उत्तर: घ)

5.9 उत्तर: क)

5.10 उत्तर: ख)

5.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरवी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी में विलंबित गत/मसीतखानी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-6
यमन राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
6.1		भूमिका
6.2		उद्देश्य तथा परिणाम
6.3		राग यमन
	6.3.1	यमन राग का परिचय
	6.3.2	यमन राग का आलाप
	6.3.3	यमन राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
	6.3.4	यमन राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4		सारांश
6.5		शब्दावली
6.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7		संदर्भ
6.8		अनुशंसित पठन
6.9		पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग यमन का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- यमन राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- यमन राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 राग यमन

6.3.1 यमन राग का परिचय

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र म॑

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प॑ म ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

यह कल्याण थाटका आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म॑) का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- ऩि रे, ऩि रे ग, ध़ ऩि रे ग, ऩि रे ग म॑ प। इस प्रकार ऩि रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। ऩि सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय ऩि रे सा, ऩि रे ग, ध़ ऩि रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी ऩि रे की संगति ही दिखाई देती है।

इसी प्रकार यमन राग का उत्तरांग भी है। यद्यपि आरोह में पंचम स्वर वर्जित नहीं है, फिर भी यहां पर म॑ ध प, म॑ ध नि सां, ग म॑ ध नि सां, नि ध प, म॑ ध प का प्रयोग होता है। अगर पंचम से आगे बढ़ना हो तो पंचम का लंघन किया जाता है तथा म॑ ध नि किया जाता है।यमन राग का अवरोह सीधा है सां नि ध प, म॑ ग रे सा परन्तु कभी कभी प, म॑ रे ग रे, ऩि रे सा भी किया जाता है। यह स्वर समुदाय राग वाचक माना जाता है। विशेष रूप से आलाप में यह स्वर संगति प्रमुखता से प्रयुक्त होती है। द्रुत लय में सां नि ध प, म॑ ध प, म॑ प ग म॑ ग रे सा सीधे स्वर लिए जाते हैं।

गंधार तथा निषाद स्वरों का प्रयोग अधिक रहता है। इन दोनों स्वरों पर न्यास किया जाता है। इसके साथ-साथ पंचम स्वर पर भी न्यास किया जाता है, रिषभ, मध्यम तथा धैवत स्वरों का प्रयोग सामान्य है अर्थात इन पर न्यास नहीं होता है। इन स्वरों का प्रयोग आरोह अवरोह में सदैव होता है पर इन पर न्यास नहीं किया जाता है, जैसे- ऩि रे ग, ऩि ध़ ऩि रे ग रे ऩि रे सा, ऩि रे ग म॑ प, म॑ ध प, म॑ ध नि ध प, म॑ प ग म॑ ग रे ऩि रे सा।

यमन राग का समप्रकृतिक राग "यमन-कल्याण" के नाम से जाना जाता है। यमन-कल्याण राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है, जैसे- प म॑ ग म ग रे सा, नि रे ग म॑ प म॑ ग म ग रे सा, अर्थात् शुद्ध मध्यम दोनों तरफ से गंधार से घिरा रहता है। दूसरी ओर यमन में के वल तीव्र मध्यम का ही प्रयोग होता है।राग यमन एक अत्यन्त ही लोकप्रिय राग है। आधुनिक समय में इसकी शिक्षा प्रारम्भ में ही दे दी जाती है। इस राग में

ध्रुवपद, ख्याल, गत शैली की अनेक रचनाएं सुनने को मिलती हैं। गीत, गज़ल भजन, फिल्मी गीतों में इस राग की सुन्दर-सुन्दर रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

12.3.2 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा,

  ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ं ध़ प़, म़ं ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़ं ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे, ग मं मं प, प, मं ग,

  रे ग मं, मं ग रे सा

- ग मं प, प, मं ध प, प, मं ध

  नी नी ध प, प, मं ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं मं पं, पं, मं गं, रें मं गं, मं गं रें सां

- रें नी ध प, प, मं ध प मं ग,

  रे मं ग रे ऩी रे सा।

6.3.3 यमन राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
											पप	म॑	गग	म॑ग	रेरे
											दिर	दा	दिर	दिर	दिर
सा	सा	सा	ऩीरें	ऩी	रेरे	ग	म॑	धनीरें	नीऽधप	म॑ग	रेसा				
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिरदिर	दाऽदिरदिर		दिर					
अन्तरा															
											पप	म॑	गग	ऽमं॑ध	नीरें
											दिर	दा	दिर	ऽदिर	दिर
सां	सां	सां	नीरें	गं	म॑म॑	गं	रेंसां	नीऽधप	म॑ग	रेसा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दाऽदिर	दिर	दिर					

6.3.4 यमन राग के तोड़े

- रेग रेगगमे गमेमेप पमेगरे गगरेसा ऩीसाऩीऽ
- मेधनीध रेंसांनीसां गंगंरेंसां रेंसांनीसां
- ऩीरेगमे पमेगरे गगरेसा ऩीरेगमे पमेगरे साऽऽऽ
- ऩीरेगमे धनीनीध पमेगरे गगरेसा गगरेसा ऩीसाऽऽ
- ऩीरेगग रेसा,ऩीरे गगरेग गरेगग रेसारेग रेसाऩीसा
- ऩीरे गमे पमेगरे गमेपमे गरेगरे गगरेसा ऩीसाऩीऽ
- नी रे ऽ रे ग ऽ ग मे ऽ मे ध ऽ ध नी ऽ नी

  सां ऽ नी ध ऽ ध मे ऽ ग रे सा ऽ ऽ प ऽ प

  ग ऽ ऽ ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ
- नीनीधप मेपधप मेपगमे गरेसाऽ

  गमेपग मेपगमे
- मेधधनी धनीनीसां रेंसांनीसां नीधनीसां
- गगरेसा ऩीसारेसा ऩीऩीधप मेपधप

  मेधऩीरे सासाऩीसा नीरेगमे पमेगमे

  गमेधनी सांनीधप मेधनीरें गरेंसांसां

  नीरेंसांनी धपमेप मेधपमे गरेसासा

ऩीरेगमॅ	पमॅगरे	साऽपमॅ	गरेसाऽ
पमॅगरे	साऽऩीरे	गमॅपमॅ	गरेसाऽ
पमॅगरे	साऽपमॅ	गरेसाऽ	ऩीरेगमॅ
पमॅगरे	साऽपमॅ	गरेसाऽ	पमॅगरे

-

म़म़मॅ़,ध़	ध़ध़,ऩीऩी,	ध़ध़ध़,ऩी	ऩीऩी,सासा,
ऩीऩीऩी,सा	सासा,रेरे,	सासासा,रे	रेरे,गग,
रेरेरे,ग	गग,मॅमॅ,	गगग,मॅ	मॅमॅ,पप,
मॅमॅमॅ,प	पप,धध,	मॅमॅमॅ,ध	धध,नीनी,
धधध,नी	नीनी,सांसां,	नीनीनी,सां	सांसा,रेंरें,
सांसांसां,नी	नीनी,धध	ध,पपप,	मॅम,मॅग
गग,रेरे	रे,सासासा,	ऩीरेगमॅ	पऽऽऽ
ऽऽऩीरे	गमॅपऽ	ऽऽऽऽ	ऩीरेगमॅ

-

सा ऩिऩि ध़ध प़प़	मॅ़ध़ध़ ऩि सा	ऩि रेरे गग मॅमॅ	गऽ गरे ऽरे साऽ
ऩि रेरे ग मॅ	रे गग मॅ ध	प मॅमॅ गग मॅमॅ	गऽ गरे ऽरे साऽ
ऩि रे सा ऽ	ऩि रे सा ऽ	ऩि रे सा ऽ	

-

ऩी रेरे ग मॅ	रे गग मॅ ध	ग मॅमॅ ध नी	मॅ धध नी सां
ध नीनी रें सां	नीऽ नीध ऽध पऽ	मॅ धध पप मॅमॅ	गऽ गरे ऽरे साऽ

ग मंमं ग रे   सा ऽ ऽ ऽ   ग मंमं ग रे   सा ऽ ऽ ऽ

ग मंमं ग रे

- गगरेसाऩीसारेसा   ऩीऩीध़प़मं़प़ध़प़   मं़ध़ऩीरेसासाऩीसा

  नीरेगमंपमंगमं   गमंधनीसांनीधप   मंधनीरेंगरेंसांसां

  नीरेंसांनीधपमंप   मंधपमंगरेसासा   ऩीरेगमंपमंगरे

  साऽपमंगरेसाऽ   पमंगरेसाऽऩीरे   गमंपमंगरेसाऽ

  पमंगरेसाऽपमं   गरेसाऽऩीरेगमं   पमंगरेसाऽपमं

  गरेसाऽपमंगरे

- ऽसाऩीसा   ऽरेसारे   ऽगरेग   ऽमंगमं

  ऽपमंप   ऽधपध   ऽपमंग   ऽमंगरे

  ऽगरेसा   ऽगरेसा   ऽगरेसा

- पमंगरे   साऽऽऽ   पमंगरे   साऽऽऽ

  पमंगरे

- पमंगरे   साऽपमं   गरेसाऽ   पमंगरे

  पमंगरे   साऽपमं   गरेसाऽ   पमंगरे

- गमं   धनि   रेंगं   रेंसां

  निध   पमं   गरे   साऽ

• सांनि	धप	मंग	रेसा
ऩिरे	गमं	धनि	सांऽ
• ऩिरे	गरे	ऩिरे	सासा
पमं	गरे	ऩिरे	सासा
• ऩिरे	गरे	गमं	गमं
पमं	गरे	ऩिरे	सासा
• ऩिरे	गरे	पध	पमं
गमं	पमं	गरे	सा-
• ऩिरे	गमं	धनि	सांनि
धप	मंग	रेरे	ऩिसा
• ऩिरे	गरे	गमं	गमं
धमं	धनि	धनि	सांऽ
• निरें	गरें	सारें	सांनि
धप	मंध	निरें	सांऽ
• गग	रेसा	ऩीसा	रेसा
ऩीऩी	ध़प़	म़ंप़	ध़प़
म़ंध़	ऩीरे	सासा	ऩीसा

नीरे	गम॑	पम॑	गम
गम॑	धनी	सांनी	धप
म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
नीरें	सांनी	धप	म॑प
म॑ध	पम॑	गरे	सासा
ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे
साऽ	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे
गम॑	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	पम॑
गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑
पम॑	गरे	साऽ	पम॑
गरे	साऽ	पम॑	गरे

- ऩिरे गरे ग- ऩिरे

  गरे ग- ऩिरे गरे

- ऩिरे गरे ग- ग-

  ग- -- ऩिरे गरे

  ग- ग- ग- --

ऩिरे गरे ग- ग-

- ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

  ग- -- ऩिध़ ऩीरे

  गरे ऩिरे ग- --

  ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

- सांनि धप मग़ रेसा

  ऩिरे गरे ग- सांनि

  धप मग़ रेसा ऩिरे

  गरे ग- सांनि धप

  मग़ रेसा ऩिरे गरे

- ऩिसा रेऩि सारे ऩिसा

  मप़ धम़ पध मप़

  निसां रेंनि सारें ऩिसां

  गंगं रेंसां निसां रेंसां

- निनि धप मप़ धप

  मप़ गम़ गरे सा-

  ऩिरे गरे ग- ऩिरे

  गरे ग- ऩिरे गरे

● गग   रेसा   ऩिसा   रेसा

ऩिऩि   ध़प़   म़॑प़   ध़प़

म़॑ध़   ऩिरे   सासा   ऩिसा

ऩिरे   गम॑   पम॑   गम॑

● म॑ध   निरें   सांसां   निसां

गरें   सारें   धनि   धप

धप   म॑प   म॑ग   म॑ग

रेग   रेसा   ऩिरे   गम॑

पम॑   गम॑   ग-   --

ऩिरे   गम॑   पम॑   गम॑

ग-   --   ऩिरे   गम॑

पम॑   गम॑

● ऩिरे   सासा   ऩिरे   गरे

सासा   ऩिरे   गम॑   गरे

सासा   ऩिरे   गम॑   पम॑

गम॑   गरे   सासा   ऩिरे

गम॑   धप   म॑प   गम॑

गरे   सासा   ऩिरे   गम॑

धनि रेंसां	सांनि धनि
धप मंप	मंप मंग
रेसा नि़सा	नि़रे ग-
नि़रे ग-	नि़रे सासा

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) प

6.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) ग

घ) सा

6.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम पहर

घ) दोपहर

6.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

6.5 यमन राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म॑ ग

ग) ध नि ध प म॑ प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म॑ ग

6.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) काफी

ख) कल्याण

ग) भैरव

घ) तोड़ी

6.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म॑ ग रे सा

ख) ग म॑ रे सा

ग) म॑ ग रे सा

घ) ग म॑ रे सा

6.8 यमन राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

6.9 यमन राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

6.10 यमन राग, कल्याण तथा यमनी रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

6.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। यह कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म') का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध॒ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म' प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध॒ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध॒ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है।शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

6.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: क)

6.2 उत्तर: ख)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: क)

6.6 उत्तर: ख)

6.7 उत्तर: ग)

6.8 उत्तर: घ)

6.9 उत्तर: क)

6.10 उत्तर: ख)

6.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

6.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन में विलंबित गत/मसीतखानी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-7
रागेश्री राग का छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
7.1		भूमिका
7.2		उद्देश्य तथा परिणाम
7.3		राग रागेश्री
	7.3.1	रागेश्री राग का परिचय
	7.3.2	रागेश्री राग का आलाप
	7.3.3	रागेश्री राग का छोटा ख्याल
	7.3.4	रागेश्री राग की तानें
		स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4		सारांश
7.5		शब्दावली
7.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7		संदर्भ
7.8		अनुशंसित पठन
7.9		पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग रागेश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग रागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग रागेश्री का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- रागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- रागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- रागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- रागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- रागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग रागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 राग रागेश्री

7.3.1 रागेश्री राग का परिचय

राग - रागेश्री

थाट - खमाज

जाति - औडव षाडव

वादी - गंधार

संवादी – निषाद

स्वर - निषाद कोमल (नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम, अवरोह में पंचम

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - बागेश्री

आरोह – नी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म ग म रे सा

पकड़ – ध़ ऩी सा म, ग म रे सा

रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है।

रागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग, म ध, ऩी सा ग, म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे गंधार पर आते हैं। जैसे-ऩी सा ग, ग म रे सा।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा ग, ग म ध नी ध तथा म ग म रे सा है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ग म रे सा की संगति प्रयुक्त होती है। रागेश्री राग का आरम्भ ऩी सा ग से अधिकतर किया जाता है।

इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म।

बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

7.3.2 आलाप

- सा, नी॒ सा, सा, नी॒ ध़ - सा रे सा,
- ध़ नी॒ नी॒ ध़ नी॒ सा, सा नी॒ ध़ म़ -,

  म़ ध़ नी॒ नी॒ सा, सा,
- ध़ नी॒ सा ग- म ग म रे सा
- सा नी॒ ध़ नी॒ ध़ -, म़ म़ ध़, म़ ध़ नी॒ नी॒ सा, सा
- ध़ नी॒ सा ग – ग म, ग म ग म रे सा,

  ग म ग – ग म ध – म ग, ग म रे सा
- म ग म ध, ध म – ध नी॒ ध म ग,

  ग म ध नी॒ नी॒ सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी॒ नी॒ सां,

  गं मं रें सां सां,
- सां नी॒ ध नी॒ ध – म, ग – म रे सा,

  ध़ नी॒ नी॒ सा ग- ग- म रे सा, सा

7.3.3 रागेश्री छोटा ख्याल द्रुतलय एक ताल

स्थायी

आज सखी श्याम सुन्दर बंसिया बजाए।

अंतरा-

मोर मुकुट सिर चढ़ाए, पग मे नूपुर सुहाए।
बंसि मुख से बजाए, मधुर-मधुर गाए

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
X		0		2		0		3		4	
स्थायी											
ग	म	रे	सा	सा	ऽ	ध	नि	सा	म	म	म
आ	ऽ	ज्	स	खी	ऽ	श्या	ऽ	म	सुँ	द	र
म	ग	म	नि	ऽ	ध	मध	निरें	सांनि	धम	मरे	.निसा
बं	ऽ	सि	या	ऽ	ब	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ
अंतरा											
म	ग	म	नि	ध	ध	नि	सां	नि	सां	ऽ	सां
मो	ऽ	र	मु	कु	ट	सि	र	च	ढा	ऽ	ए
ध	नि	सां	गं	रें	सां	नि	सां	रें	नि	ऽ	ग
प	ग	में	**ऽ**	नु	ऽ	पु	र	सु	हा	**ऽ**	ए
म	ग	म	धनि	सां	सां	नि	सारें	सां	नि	ऽ	ग
बं	ऽ	सी	मु	ऽ	ख	से	ऽ	ल	गा`	ए	ऽ
सां	नि	ध	म	ग	म	गम	धनि	सांनि	धम	ऽ	ग
म	धु	र	म	धु	र	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ
X		0		2		0		3		4	

7.3.4 रागेश्री की तानें

-

साऩी	धऩी	साग	मध
नीनी	धम	गम	रेसा

-

साऩी	धऩी	साग	मध
नीसां	नीध	मग	गम
रेसा	सांनी	धम	धनी
धम	गम	रेसा	ऩीसा

-

मध	नीसां	धनी	सानी
धम	गम	गम	रेसा
गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी

-

धऩी	साऩी	सा-	धऩी
साऩी	सा-	धऩी	साऩी

-

साऩी	धऩी	रेसा	ऩीसा
गम	रेसा	धम	गम
नीध	सांनी	धम	गम
रेसा	ऩीसा	रेसा	सा-

•	साग	मग	मध	धम
	गम	रेसा	ऩीरे	साऽ
•	मध	नीध	सांनि	धम
	गम	धम	गम	रेसा
•	मध	निध	मग	मध
	नीध	धम	गम	रेसा
•	सांनी	धनी	साग	मध
	नीनी	धम	गम	रेसा
•	गम	धनी	सांनी	धनी
	सां-	सां-	सां-	--
	गम	धनी	सांनी	धनी
	सां-	सां-	सां-	--
	गम	धनी	सांनी	धनी
	सां-	सां-	सां-	--
•	ऩीसा	गम	धनी	धम
	गम	धम	गम	रेसा
	ऩीसा	गम	ग-	ऩीसा
	गम	ग-	ऩीसा	गम

-

ध़ऩी	साग	ऩीसा	गम
साग	मध	गम	धनी
मध	नीसां	धनी	सांगं
मरें	रेंसां	नीध	नीध
मग	गम	रेसा	ऩीसा
ग-	गम	ध-	--
ऩीसा	ग-	गम	ध-
--	ऩीसा	ग-	गम

-

म़ म़	म़ ध़	ध़ ध़	ऩी ऩी
ध़ ध़	ध़ ऩी	ऩी ऩी	सा सा
ऩी ऩी	ऩी सा	सा सा	रे रे
सा सा	सा ग	ग ग	म म
ग ग	ग म	म म	ध ध
म म	म ध	ध ध	नी नी
ध ध	ध नी	नी नी	सा सां
नी नी	नी सां	सां सां	गं गं
सां सां	सां गं	गं गं	मं मं
रें रें	रें सां	सां सां	नी नी

सां सां	सां नी	नी नी	ध ध
नी नी	नी ध	ध ध	म म
ध ध	ध म	म म	ग ग
ग ग	ग म	म म	रे रे
साऽ	साऽ	ऽऽ	साऽ
साऽ	ऽऽ	साऽ	साऽ

- ऩीऩीऩी सासासा गगग ममम
  धधध नीनीनी सांसांसां गंगंग
  मंमंमं रेंरेंरें सांसांसां नीनीनी
  धधध ममम धधध ममम
  गगग ममम रेंरेंरे सासासा
  ऩीनीऩी सासासा

- ऩीसा ऩीसा ध़ऩी ध़ऩी
  म़ध़ म़ध़ म़ध़ ऩीसा
  ध़ऩी सासा साग मग
  गम धनी धम गम
  गम धध मध नीनी
  धनी सांसां नीसां नीसां

धनी	धनी	धनी	सांनी
धम	धनी	धम	धम
गम	गम	रेसा	रेसा
ऩीसा	गऩी	साग	ऩीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 रागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) नी

घ) ध

7.2 रागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) प

घ) म

7.3 रागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

7.4 रागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) निषाद

7.5 रागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) ग

घ) सा

7.6 रागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

7.7 रागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म ग म रे

घ) नि सां नी ध म ग रे

7.8 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

7.9 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

7.10 रागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

7.4 सारांश

रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। रागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानें को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

7.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: क)

7.2 उत्तर: ख)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: घ)

7.5 उत्तर: क)

7.6 उत्तर: ख)

7.7 उत्तर: ग)

7.8 उत्तर: घ)

7.9 उत्तर: क)

7.10 उत्तर: ख)

7.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

7.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग रागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग रागेश्री में आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग रागेश्री में छोटे ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग रागेश्री में छोटे ख्याल की तानों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग रागेश्री में आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग रागेश्री में छोटे ख्याल को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 7. राग रागेश्री में छोटे ख्याल की तानों को गा कर सुनाइए।

इकाई-8
भैरवी राग का छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
8.1		भूमिका
8.2		उद्देश्य तथा परिणाम
8.3		राग भैरवी
	8.3.1	भैरवी राग का परिचय
	8.3.2	भैरवी राग का आलाप
	8.3.3	भैरवी राग का छोटा ख्याल 1
	8.3.4	भैरवी राग का छोटा ख्याल 2
	8.3.5	भैरवी राग की तानें
		स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4		सारांश
8.5		शब्दावली
8.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7		संदर्भ
8.8		अनुशंसित पठन
8.9		पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग भैरवी का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- भैरवी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भैरवी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 राग भैरवी

8.3.1 भैरवी राग का परिचय

रे ग ध नि कोमल राखत, मानत माध्यम वादी।

प्रातः समय जाति, सोहट सा संवादी।।

राग- भैरवी

थाट- भैरवी

जाति-सम्पूर्ण- सम्पूर्ण।

वादी- म

सम्वादी- सा

स्वर- रे, ग, ध, नि कोमल।

न्यास के स्वर- सा, ग, म, प।

गायन वादन समय- प्रातः काल

समप्रकृतिक राग- बिलासखानी तोड़ी।

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे, ग, ध, नि कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

शुद्ध रे और शुद्ध ध का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि अगर किसी साधारण गायक या वादक को भैरवी मे शुद्ध रे और ध का प्रयोग करने के लिए मना कर दिया जाए तो उसे भैरवी गाना कुछ मुश्किल हो जाएगा। यह गंभीर प्रकृति का राग नहीं है। अतः इसमें छोटा ख्याल, तराना तथा टप्पा- ठुमरी गाई- बजाई जाती है। किन्तु फिल्म संगीत मे इस राग के स्वरों का प्रयोग अधिक होने लगा है।

8.3.2 भैरवी राग का आलाप

- सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा,

  नि ध प, प ध नि सा रे सा।

- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प,

  म प ग, सा रे ग म प ऽ ध

  प म प ग म ग, सा ग प ऽ म,

  प ऽ ग म ग ऽ रे सा,

  ध नि सा ग रे सा।

- नि सा ग म प ऽ ध प,

  ग म प ध प, नि ध प,

  प ध नि ऽ ध नि ऽ प ध प,

  म प नि ध प, सा ऽ प

  प ध प म प म ग,

  सा रे ग म ग, सा रे सा,

  ध नि सा रे सा।

- ग म ध नि सां, रें सां गं रें सां,

  सां रें गं सां रें मं गं सां रें सां,

  नि सां नि सां रें सां ध प, नि ध

  प प ऽ प ध ऽऽ प,

  ध म प म ग,

  सा ग म प, म ग सा रे सा,

  ध नि ध सा,

  रे सा ग रे सा।

8.3.3 भैरवी छोटा ख्याल 1 द्रुतलय तीन ताल

सुराभरण भैरवी स्वनरंग, ठाठ भैरवी संपूरन संग।

मध्यम वादी ससा सदा सुहागन सर्वकोमला भैरवी रसरंग।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
								ध	सां	ऽ	रें	सां	सां	ध	नि
								सु	रा	ऽ	भ	र	ण	भै	र
सां	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ध	प	प								
वी	ऽ	ऽ	ऽ	स्व	न	रं	ग								
								प	ऽ	ध	नि	सां	सां	सां	ऽ
								ठा	ऽ	ठ	भै	ऽ	र	वी	ऽ
नि	ध	प	म	ग	रे	ग	सा								
सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	अं	ग								
अंतरा															
								म	ऽ	ध	नि	सां	सां	नि	सां
								म	ऽ	ध्य	म	वा	दी	स	सा
सां	सां	ऽ	सां	ध	ऽ	रें	सां								
स	दा	ऽ	सु	हा	ऽ	ग	न								
								मं	गं	रें	सां	सां	रें	सां	सां
								स	र	व	को	ऽ	म	ला	ऽ
नि	ध	प	म	ग	रे	सा	सा								
भै	ऽ	र	वी	र	स	रं	ग								

8.3.4 भैरवी छोटा ख्याल 2 द्रुतलय तीन ताल

घर जाने दो, करो मत रास मोसे, बरजोरी न करो तुम, यशोदा कान्हा।

गौएं चराओ, बंसिया बजाओ, पनघट न आओ, मई दूँगी गारि।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
						ग	म	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	नि़
						घ	र	जा	ने	डॉ	क	रो	ऽ	म	त
ग़रे	रे	सा	ग	ऽ	म										
रा	ऽ	र	मो	ऽ	से										
						प	ध	सां	सां	रें	गं	सां	ऽ	सां	ऽ
						ब	र	जो	री	न	क	रो	ऽ	तुम	ऽ
प	नि	ध	प	म़ग	म										
या	शो	धा	का	ऽ	न्हा										
अंतरा															
								ग	म	ध	नि	सांगं	रेंगं	रें	सां
								गौ	ऽ	एं	च	राऽ	ऽ	ओ	ऽ
नि	नि	सां	रें	नि	सां	ध	प								
बं	सि	या	ब	जा	ओ	प	न								
								प	गं	मं	रें	ऽ	सां	सां	सां
								घ	ट	न	आ	ऽ	ओ	मैं	ऽ
प	ध	म	प	ग	म										
दूँ	ऽ	गी	गा	ऽ	रि										

8.3.5 भैरवी राग की तानें

- सारे गम गरे सारे
  गम पम गरे साऽ
- गम पम पम गम
  गरे सारे गरे साऽ
- सारे गम मप गम
  पम गम गरे साऽ
- सारे गम गरे साऩी
  धप धऩी साऩी साऽ
- ऩीसा गम पऽ मप
  गम पम गरे साऽ
- सारे सारे गरे सारे
- ऩीसा ऩीसा रेसा साऽ
- सारें गरें सांनि धनि
  सांनि धप मग रेसा
- निसा गम पध पम
  गम पध निध पम

• गम	पध	निसां	रेंसां
सांनि	धप	मग	रेसा
• सारे	रेग	गम	मप
पध	धनी	नीसां	सांरें
सांनी	नीध	धप	पम
मग	गरे	रेसा	साऽ
• सारे	गम	पध	मप
गम	गरे	गग	रेसा
• सारे	गरे	गम	गम
पम	गरे	गग	रेसा
• सांनी	धनी	धप	मप
गम	गरे	गग	रेसा
• ध़नी़	सारे	सानी़	सारे
गग	रेग	मप	धप
• पम	गम	गरे	गग
रेसा	रेग	रेसा	नी़सा
• गम	धप	मप	गम

गरे	सारे	नीसा	रेग
सारे	गम	पध	पम
पग	मरे	गग	रेसा
• सारे	गरे	साग	मप
गम	पध	नीसां	सांऽ
ऽऽ	सांऽ	ऽऽ	सांऽ
ऽऽ	गम	पध	नीसां
सांऽ	ऽऽ	सांऽ	ऽऽ
सांऽ	ऽऽ	गम	पध
नीसां	सांऽ	ऽऽ	सांऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) ग

8.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) प

8.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) प्रातः काल

घ) दोपहर

8.4 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

8.5 भैरवी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) प

ग) म

घ) सा

8.6 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) आसावरी

ख) भैरवी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

8.7 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ग म प ध प, म ग रे सा।

ग) ग म प ध प, म ग रे सा।

घ) ध नि सां नी ध म ग

8.8 भैरवी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

8.9 भैरवी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

8.10 भैरवी राग, भैरव तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

8.4 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन-वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे, ग, ध, नि कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ख)

8.3 उत्तर: ग)

8.4 उत्तर: घ)

8.5 उत्तर: क)

8.6 उत्तर: ख)

8.7 उत्तर: ग)

8.8 उत्तर: घ)

8.9 उत्तर: क)

8.10 उत्तर: ख)

8.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरवी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-9
यमन राग का छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
9.1		भूमिका
9.2		उद्देश्य तथा परिणाम
9.3		राग यमन
	9.3.1	यमन राग का परिचय
	9.3.2	यमन राग का आलाप
	9.3.3	यमन राग का छोटा ख्याल 1
	9.3.4	यमन राग का छोटा ख्याल 2
	9.3.5	यमन राग की तानें
		स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4		सारांश
9.5		शब्दावली
9.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7		संदर्भ
9.8		अनुशंसित पठन
9.9		पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग यमन का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/ द्रुत ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 राग यमन

9.3.1 यमन राग का परिचय

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र मं

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, मं प, मं ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प मं ध पं म ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग मं प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

यह कल्याण थाटका आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म॑) का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म॑ प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है।

इसी प्रकार यमन राग का उत्तरांग भी है। यद्यपि आरोह में पंचम स्वर वर्जित नहीं है, फिर भी यहां पर म॑ ध प, म॑ ध नि सां, ग म॑ ध नि सां, नि ध प, म॑ ध प का प्रयोग होता है। अगर पंचम से आगे बढ़ना हो तो पंचम का लंघन किया जाता है तथा म॑ ध नि किया जाता है।यमन राग का अवरोह सीधा है सां नि ध प, म॑ ग रे सा परन्तु कभी कभी प, म॑रे ग रे, नि॒ रे सा भी किया जाता है। यह स्वर समुदाय राग वाचक माना जाता है। विशेष रूप से आलाप में यह स्वर संगति प्रमुखता से प्रयुक्त होती है। द्रुत लय में सां नि ध प, म॑ ध प, म॑ प ग म॑ ग रे सा सीधे स्वर लिए जाते हैं।

गंधार तथा निषाद स्वरों का प्रयोग अधिक रहता है। इन दोनों स्वरों पर न्यास किया जाता है। इसके साथ-साथ पंचम स्वर पर भी न्यास किया जाता है, रिषभ, मध्यम तथा धैवत स्वरों का प्रयोग सामान्य है अर्थात इन पर न्यास नहीं होता है। इन स्वरों का प्रयोग आरोह अवरोह में सदैव होता है पर इन पर न्यास नहीं किया जाता है, जैसे- नि॒ रे ग, नि॒ ध़ नि॒ रे ग रे नि॒ रे सा, नि॒ रे ग म॑ प, म॑ ध प, म॑ ध नि ध प, म॑ प ग म॑ ग रे नि॒ रे सा।

यमन राग का समप्रकृतिक राग "यमन-कल्याण" के नाम से जाना जाता है। यमन-कल्याण राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है, जैसे- प म॑ ग म ग रे सा, नि॒ रे ग म॑ प म॑ ग म ग रे सा, अर्थात् शुद्ध मध्यम दोनों तरफ से गंधार से घिरा रहता है। दूसरी ओर यमन में के वल तीव्र मध्यम का ही प्रयोग होता है।राग यमन एक अत्यन्त ही लोकप्रिय राग है। आधुनिक समय में इसकी शिक्षा प्रारम्भ में ही दे दी जाती है। इस राग में ध्रुवपद, ख्याल, गत शैली की अनेक रचनाएं सुनने को मिलती हैं। गीत, गज़ल भजन, फिल्मी गीतों में इस राग की सुन्दर-सुन्दर रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

9.3.2 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा,

  ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ं ध़ प़,

  म़ं ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़ं ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे, ग मं मं प, प, मं ग,

  रे ग मं, मं ग रे सा

- ग मं प, प, मं ध प, प, मं ध

  नी नी ध प, प, मं ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं मं पं, पं, मं गं,

  रें मं गं, मं गं रें सां

- रें नी ध प, प, मं ध प मं ग,

  रे मं ग रे ऩी रे सा।

9.3.3 यमन राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

स्थाई- श्याम बजाये आज मुरलिया,

धुन सुन मैं हो गयी रे बांवरिया।

अंतरा- मुरली बजावत धेनु चरावत,

कितहूँ छिप गये आज सांवरिया।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
								ग	रे	ग	रे	ऩि	रे	सा	सा
								श्या	ऽ	म	ब	जा	ऽ	व	त
ऩि	ध़	ऩि	रे	गग	रे	ग	ऽ								
आ	ऽ	ज्	मु	र	ऽ	ली	या								
								म॑	ध	म॑	ध	म॑ध	निसां	सां	सां
								धु	न	सु	न	मैंऽ	ऽ	हो	ऽ
नि	ध	प	प	पम॑	गरे	ग	ग								
ग	ई	रे	बा	वऽ	रीऽ	या	ऽ								
अंतरा															
								म॑	ध	म॑	ध	मध	निसां	सां	सां
								मु	र	ली	ब	जाऽ	ऽऽ	व	त
नि	रें	गं	रें	सांनि	रें	सां	सां								
धे	ऽ	नु	च	राऽ	ऽ	व	त								
								नि	नि	नि	सां	नि	निध	प	प
								कि	त	हूँ	ऽ	छि	पऽ	ग	ये
म॑	म॑	प	प	पम॑	गरे	ग	ग								
आ	ऽ	ज्	सां	वऽ	रिऽ	या	ऽ								

9.3.4 यमन राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) 2

राग: यमन **ताल: एक ताल** **लय: मध्य**

स्थायी

सब गुणी जन इमन गात

तीवर सुर करत साथ

सासा रेरे गग म॑म॑ पप धध नीनी

रेंरें गरें सारें सांनी धप

अंतरा

सुर वादी गंधार साध

सम वादी कर निखाद

रात समय प्रथम प्रहर

चतुर सुजन मन रिझात

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
[प]सां	सां	नी	[ध]नी	[ध]म॑	प	[म॑]प	प	म॑	ग	-	ग
स	ब	गु	नी	ज	न	इ	म	न	गा	-	त
[म॑]ग	-	ग	रे	ग	प	[ग]रे	ग	रे	[रे]ऩी	रे	सा
ती	-	व	र	सु	र	क	र	त	सा	-	थ
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
नी	नी	रें	रें	गं	रें	[नी]सां	रें	सां	नी	ध	प

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
म॑प	ग	प	-	ध	प	पसां	-	सां	सां	-	सां
सु	र	वा	-	दी	गं	धा	-	र	सा	-	ध
नीसां	सां	रें	-	गं	रें	सां	सां	नी	धनी	ध	प
स	म	वा	-	दी	-	क	र	नि	खा	-	द
प	ग	ग	प	प	प	पनी	नी	ध	न	ध	प
रा	-	त	स	म	य	प्र	थ	म	प्र	ह	र
सां	सं	नी	धनी	म॑	प	प	ग	प	गरे	-	सा
च	तु	र	सु	ज	न	म	न	रि	झा	-	त
स्थायी											
पसां	सां	नी	धनी	धम॑	प	म॑प	प	म॑	ग	-	ग
स	ब	गु	नी	ज	न	इ	म	न	गा	-	त
म॑ग	-	ग	रे	ग	प	गरे	ग	रे	रेनी	रे	सा
ती	-	व	र	सु	र	क	र	त	सा	-	थ
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
नी	नी	रें	रें	गं	रें	नीसां	रें	सां	नी	ध	प

9.3.5 यमन राग की तानें

- ऩिरे गरे ऩिरे सासा
  पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑
  पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे पध पम॑
  गम॑ पम॑ गरे सा-
- ऩिरे गम॑ धनि सांनि
  धप म॑ग रेरे ऩिसा
- गम॑ धनि रेंगं रेंसां
  निध पम॑ गरे साऽ
- सांनि धप म॑ग रेसा
  ऩिरे गम॑ धनि सांऽ
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑
  धम॑ धनि धनि सांऽ
- निरें गरें सारें सांनि
  धप म॑ध निरें सांऽ

- गग रेसा ऩीसा रेसा

  ऩीऩी ध़प़ म़ंप़ ध़प़

  म़ंध़ ऩीरे सासा ऩीसा

  नीरे गमं पमं गम

  गमं धनी सांनी धप

  मंध नीरें गरैं सांसां

  नीरें सांनी धप मंप

  मंध पमं गरे सासा

  ऩीरे गमं पमं गरे

  साऽ पमं गरे साऽ

  पमं गरे साऽ ऩीरे

  गमं पमं गरे साऽ

  पमं गरे साऽ पमं

  गरे साऽ ऩीरे गमं

  पमं गरे साऽ पमं

  गरे साऽ पमं गरे

- ऩिरे गरे ग- ऩिरे

  गरे ग- ऩिरे गरे

- ऩिरे गरे ग- ग-

  ग- -- ऩिरे गरे

  ग- ग- ग- --

  ऩिरे गरे ग- ग-

- ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

  ग- -- ऩिध़ ऩीरे

  गरे ऩिरे ग- --

  ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

- सांनि धप मग़ रेसा

  ऩिरे गरे ग- सांनि

  धप मग़ रेसा ऩिरे

  गरे ग- सांनि धप

  मग़ रेसा ऩिरे गरे

- ऩिसा रेऩि सारे ऩिसा

  मप़ धम़ पध मप़

  निसां रेंनि सारें ऩिसां

  गंगं रेंसां निसां रेंसां

•	निनि	धप	मंप	धप
	मंप	गमं	गरे	सा-
	ऩिरे	गरे	ग-	ऩिरे
	गरे	ग-	ऩिरे	गरे
•	गग	रेसा	ऩिसा	रेसा
	ऩिऩि	ध़प़	म़ंप़	ध़प़
	म़ंध़	ऩिरे	सासा	ऩिसा
	ऩिरे	गमं	पमं	गमं
•	मंध	निरें	सांसां	निसां
	गरें	सारें	धनि	धप
	धप	मंप	मंग	मंग
	रेग	रेसा	ऩिरे	गमं
	पमं	गमं	ग-	--
	ऩिरे	गमं	पमं	गमं
	ग-	--	ऩिरे	गमं
	पमं	गमं		
•	ऩिरे	सासा	ऩिरे	गरे
	सासा	ऩिरे	गमं	गरे

सासा	ऩिरे	गम॑	पम॑
गम॑	गरे	सासा	ऩिरे
गम॑	धप	म॑प	गम॑
गरे	सासा	ऩिरे	गम॑
धनि	रेंसां	सांनि	धनि
धप	म॑प	म॑प	म॑ग
रेसा	ऩिसा	ऩिरे	ग-
ऩिरे	ग-	ऩिरे	

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) प

9.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) ग

घ) सा

9.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम पहर

घ) दोपहर

9.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

9.5 यमन राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म॑ ग

ग) ध नि ध प म॑ प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म॑ ग

9.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) काफी

ख) कल्याण

ग) भैरव

घ) तोड़ी

9.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म॑ ग रे सा

ख) ग म॑ रे सा

ग) म॑ ग रे सा

घ) ग म॑ रे सा

9.8 यमन राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

9.9 यमन राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

9.10 यमन राग, कल्याण तथा यमनी रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

9.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म॑) का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म॑ प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है।शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ख)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: ख)

9.7 उत्तर: ग)

9.8 उत्तर: घ)

9.9 उत्तर: क)

9.10 उत्तर: ख)

9.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-10
रागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
10.1		भूमिका
10.2		उद्देश्य तथा परिणाम
10.3		राग रागेश्री
	10.3.1	रागेश्री राग का परिचय
	10.3.2	रागेश्री राग का आलाप
	10.3.3	रागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
	10.3.4	रागेश्री राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4		सारांश
10.5		शब्दावली
10.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7		संदर्भ
10.8		अनुशंसित पठन
10.9		पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग रागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग रागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग रागेश्री का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- रागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- रागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- रागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- रागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- रागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग रागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 राग रागेश्री

10.3.1 रागेश्री राग का परिचय

राग - रागेश्री

थाट - खमाज

जाति - औडव षाडव

वादी - गंधार

संवादी – निषाद

स्वर - निषाद कोमल (नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम, अवरोह में पंचम

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - बागेश्री

आरोह – ऩी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म ग म रे सा

पकड़ – ध़ ऩी सा म, ग म रे सा

रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है।

रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। रागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग, म ध, ऩी सा ग, म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे गंधार पर आते हैं। जैसे-ऩी सा ग, ग म रे सा।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा ग, ग म ध नी ध तथा म ग म रे सा है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ग म रे सा की संगति प्रयुक्त होती है। रागेश्री राग का आरम्भ ऩी सा ग से अधिकतर किया जाता है।

इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा।

रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

10.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,
- ध़ ऩी सा ग- म ग म रे सा

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा

- ध़ ऩी सा ग – ग म,

  ग म ग म रे सा,

  ग म ग – ग म ध – म ग,

  ग म रे सा

- म ग म ध, ध म – ध नी ध म ग,

  ग म ध नी नी सां, सां

- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

  गं मं रें सां सां,

- सां नी ध नी ध – म,

  ग – म रे सा,

  ध़ ऩी ऩी सा ग- ग- म रे सा, सा

10.3.3 रागेश्री द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: रागेश्री **ताल: तीन ताल** **लय: द्रुत लय**

x				**2**				**0**				**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
						गग	मम	रेऽ	रेसा	ऽसा	नीऽ	साऽ	धऽ	ऽऽ	नीऽ
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	राऽ	दाऽ	ऽऽ	राऽ
सा	ऽ	ग	ऽ	म	ऽ										
दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ										
						ग	म	ऽ	सांसां	नीनी	धध	नीऽ	नीध	ऽध	मऽ
						दा	रा	ऽ	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
ग	म	रे	सा	ऽ	ऽ										
दा	रा	दा	रा	ऽ	ऽ										
अन्तरा															
						गग	मम	गऽ	ऽग	गऽ	मऽ	ऽम	मऽ	ध	नी
						दिर	दिर	दाऽ	ऽर	दाऽ	दाऽ	ऽर	दाऽ	दा	रा
सांऽ	ऽसां	सांऽ	साऽ	नी	गं	सां									
दाऽ	ऽदा	रऽ	दाऽ	दा	रा	दा									
								गं	मंमं	रें	सां	नीऽ	नीध	ऽध	मऽ
								दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
ग	म	रे	सा	ऽ	ऽ										
दा	रा	दा	रा	ऽ	ऽ										

10.3.4 रागेश्री राग के तोड़े

- मध नीध सांनि धम
  गम धम गम रेसा
- मध निध मग मध
  नीध धम गम रेसा
- ध़नी साऩी सा- ध़नी
  साऩी सा- ध़नी साऩी
- साऩी ध़नी साग मध
  नीनी धम गम रेसा
- साऩी ध़नी साग मध
  नीसां नीध मग गम
  रेसा सांनी धम धनी
  धम गम रेसा ऩीसा
- मध नीसां धनी सानी
  धम गम गम रेसा
  गम धनी सां- गम
  धनी सां- गम धनी

- साऩी धऩी रेसा ऩीसा

  गम रेसा धम गम

  नीध सांनी धम गम

  रेसा ऩीसा रेसा सा-

- साग मग मध धम

  गम रेसा ऩीरे साऽ

- सांनी धनी साग मध

  नीनी धम गम रेसा

- गम धनी सांनी धनी

  सां- सां- सां- --

  गम धनी सांनी धनी

  सां- सां- सां- --

  गम धनी सांनी धनी

  सां- सां- सां- --

- ऩीसा गम धनी धम

  गम धम गम रेसा

  ऩीसा गम ग- ऩीसा

  गम ग- ऩीसा गम

• ध़ऩी	साग	ऩीसा	गम
साग	मध	गम	धनी
मध	नीसां	धनी	सांगं
मरें	रेंसां	नीध	नीध
मग	गम	रेसा	ऩीसा
ग-	गम	ध-	--
ऩीसा	ग-	गम	ध-
--	ऩीसा	ग-	गम
• म़ म़	म़ ध़	ध़ ध़	ऩी ऩी
ध़ ध़	ध़ ऩी	ऩी ऩी	सा सा
ऩी ऩी	ऩी सा	सा सा	रे रे
सा सा	सा ग	ग ग	म म
ग ग	ग म	म म	ध ध
म म	म ध	ध ध	नी नी
ध ध	ध नी	नी नी	सा सां
नी नी	नी सां	सां सां	गं गं
सां सां	सां गं	गं गं	मं मं
रें रें	रें सां	सां सां	नी नी

सां सां	सां नी	नी नी	ध ध
नी नी	नी ध	ध ध	म म
ध ध	ध म	म म	ग ग
ग ग	ग म	म म	रे रे
साऽ	साऽ	ऽऽ	साऽ
साऽ	ऽऽ	साऽ	साऽ

- ऩीऩीऩी सासासा गगग ममम

  धधध नीनीनी सांसांसां गंगंग

  मंमंमं रेंरेंरें सांसांसां नीनीनी

  धधध ममम धधध ममम

  गगग ममम रेंरेंरे सासासा

  ऩीनीऩी सासासा

- ऩीसा ऩीसा ध़ऩी ध़ऩी

  म़ध़ म़ध़ म़ध़ ऩीसा

  ध़ऩी सासा साग मग

  गम धनी धम गम

  गम धध मध नीनी

  धनी सांसां नीसां नीसां

धनी	धनी	धनी	सांनी
धम	धनी	धम	धम
गम	गम	रेसा	रेसा
ऩीसा	गऩी	साग	ऩीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 रागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) नी

घ) ध

10.2 रागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) प

घ) म

10.3 रागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

10.4 रागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) निषाद

10.5 रागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) ग

घ) सा

10.6 रागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

10.7 रागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म ग म रे

घ) नि सां नी ध म ग रे

10.8 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

10.9 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

10.10 रागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

10.4 सारांश

रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। रागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य लय/ द्रुत लय, में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

10.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ख)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: ख)

10.7 उत्तर: ग)

10.8 उत्तर: घ)

10.9 उत्तर: क)

10.10 उत्तर: ख)

10.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 4-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग रागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग रागेश्री में आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग रागेश्री में द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग रागेश्री में द्रुत गत के तोड़ों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग रागेश्री में आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग रागेश्री में द्रुत गत को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 7. राग रागेश्री में द्रुत गत की तोड़ों को बजा कर सुनाइए।

इकाई-11
भैरवी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
11.1		भूमिका
11.2		उद्देश्य तथा परिणाम
11.3		राग भैरवी
	11.3.1	भैरवी राग का परिचय
	11.3.2	भैरवी राग का आलाप
	11.3.3	भैरवी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
	11.3.4	भैरवी राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4		सारांश
11.5		शब्दावली
11.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7		संदर्भ
11.8		अनुशंसित पठन
11.9		पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग रागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग रागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग रागेश्री का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भैरवी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 राग भैरवी

11.3.1 भैरवी राग का परिचय

रे ग ध नि कोमल राखत, मानत माध्यम वादी।

प्रातः समय जाति, सोहट सा संवादी।।

राग- भैरवी

थाट- भैरवी

जाति-सम्पूर्ण- सम्पूर्ण।

वादी- म

सम्वादी- सा

स्वर- रे, ग, ध, नि कोमल।

न्यास के स्वर- सा, ग, म, प।

गायन वादन समय- प्रातः काल

समप्रकृतिक राग- बिलासखानी तोड़ी।

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़- म ग॒ रे॒ ग॒, सा रे॒ सा, ग॒ म प ध॒ प, म ग॒ रे॒ सा।

शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे॒, ग॒, ध॒, नि॒ कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है।

शुद्ध रे और शुद्ध ध का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि अगर किसी साधारण गायक या वादक को भैरवी मे शुद्ध रे और ध का प्रयोग करने के लिए मना कर दिया जाए तो उसे भैरवी गाना कुछ मुश्किल हो जाएगा। यह गंभीर प्रकृति का राग नहीं है। अतः इसमें छोटा ख्याल, तराना तथा टप्पा- ठुमरी गाई- बजाई जाती है। किन्तु फिल्म संगीत मे इस राग के स्वरों का प्रयोग अधिक होने लगा है।

11.3.2 भैरवी राग का आलाप

- सा रे॒ सा, ध॒ नि॒ सा, ग॒ रे॒ सा,

  नि॒ ध॒ प, प ध॒ नि॒ सा रे सा।

- सा रे॒ ग॒ ऽ रे॒ ग॒ सा,

  प ध॒ प, म प ग॒,

  सा रे॒ ग॒ म प ऽ

  ध॒ प म प ग॒ म ग॒,

  सा ग॒ प ऽ म, प ऽ

  ग॒ म ग॒ ऽ रे॒ सा,

  ध॒ नि॒ सा ग॒ रे सा।

- नि सा ग म प ऽ ध प,

  ग म प ध प, नि ध प,

  प ध नि ऽ ध नि ऽ प ध प,

  म प नि ध प, सा ऽ प

  प ध प म प म ग,

  सा रे ग म ग, सा रे सा,

  ध नि सा रे सा।

- ग म ध नि सां,

  रें सां गं रें सां,

  सां रें गं सां रें मं गं सां रें सां,

  नि सां नि सां रें सां ध प,

  नि ध प प ऽ प ध ऽऽ प,

  ध म प म ग,

  सा ग म प,

  म ग सा रे सा,

  ध नि ध सा,

  रे सा ग रे सा।

11.3.3 भैरवी राग द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: भैरवी ताल: तीन ताल लय: द्रुत लय

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
								प	सांसां	निनि	धध	पऽ	पग	ऽग	म
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	द
प	ऽ	ग	म	ग	रेरे	सा	सा								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	निनि	सा	ग	रे	रेरे	सा	सा
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	निनि	सां	नि	ध	पप	ग	म								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
अंतरा															
								ग	मम	ध	नि	सां	ऽ	सां	ऽ
								दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	ऽ
ध	निनि	सां	गं	रें	रेंरें	सां	सां								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								सां	रेंरें	नि	सां	ध	निनि	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म	पप	ग	म	ग	रेरे	सा	सा								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								

11.3.4 भैरवी राग के तोड़े

- सारे गम गरे सारे

  गम पम गरे साऽ

- गम पम पम गम

  गरे सारे गरे साऽ

- सारे गम मप गम

  पम गम गरे साऽ

- सारे गम गरे साऩी

  धप धऩी साऩी साऽ

- ऩीसा गम पऽ मप

  गम पम गरे साऽ

- सारे सारे गरे सारे

- ऩीसा ऩीसा रेसा साऽ

- सारें गरें सांनि धनि

  सांनि धप मग रेसा

- निसा गम पध पम

  गम पध निध पम

- गम पध निसां रेंसां

  सांनि धप मग रेसा

- सारे रेग गम मप

  पध धनी नीसां सारें

  सांनी नीध धप पम

  मग गरे रेसा साऽ

- सारे गम पध मप

  गम गरे गग रेसा

- सारे गरे गम गम

  पम गरे गग रेसा

- सांनी धनी धप मप

  गम गरे गग रेसा

- ध़ऩी सारे साऩी सारे

  गग रेग मप धप

- पम गम गरे गग

  रेसा रेग रेसा ऩीसा

- गम धप मप गम

गरे	सारे	नीसा	रेग
सारे	गम	पध	पम
पग	मरे	गग	रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) ग

11.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) प

11.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) प्रातः काल

घ) दोपहर

11.4 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

11.5 भैरवी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) प

ग) म

घ) सा

11.6 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) आसावरी

ख) भैरवी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

11.7 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ग म प ध प, म ग रे सा।

ग) ग म प ध प, म ग रे सा।

घ) ध नि सां नी ध म ग

11.8 भैरवी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

11.9 भैरवी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

11.10 भैरवी राग, भैरव तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

11.4 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय नियमानुसार इस राग का गायन-वादन समय प्रातः काल है, किन्तु प्रचार मे इस राग को हर समय गाते-बजाते हैं। लगभग प्रत्येक संगीत सभा इसी राग से समाप्त होती है। मतभेद- इस राग मे कुछ संगीतज्ञ प सा किन्तु अधिकांशतः म-सा वादी-संवादी मानते हैं। इस राग में रे, ग, ध, नि कोमल लगते हैं, किन्तु प्रचार मे इस राग में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: ख)

11.7 उत्तर: ग)

11.8 उत्तर: घ)

11.9 उत्तर: क)

11.10 उत्तर: ख)

11.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

11.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरवी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी में द्रुत गत/रजाखनी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-12
यमन राग की द्रुत गत/रजाखनी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
12.1		भूमिका
12.2		उद्देश्य तथा परिणाम
12.3		राग यमन
	12.3.1	यमन राग का परिचय
	12.3.2	यमन राग का आलाप
	12.3.3	यमन राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
	12.3.4	यमन राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4		सारांश
12.5		शब्दावली
12.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7		संदर्भ
12.8		अनुशंसित पठन
12.9		पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग यमन का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- यमन राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 राग यमन

12.3.1 यमन राग का परिचय

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र म॑

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प॑ म ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

यह कल्याण थाटका आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म॑) का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म॑ प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है।

इसी प्रकार यमन राग का उत्तरांग भी है। यद्यपि आरोह में पंचम स्वर वर्जित नहीं है, फिर भी यहां पर म॑ ध प, म॑ ध नि सां, ग म॑ ध नि सां, नि ध प, म॑ ध प का प्रयोग होता है। अगर पंचम से आगे बढ़ना हो तो पंचम का लंघन किया जाता है तथा म॑ ध नि किया जाता है।यमन राग का अवरोह सीधा है सां नि ध प, म॑ ग रे सा परन्तु कभी कभी प, म॑रे ग रे, नि॒ रे सा भी किया जाता है। यह स्वर समुदाय राग वाचक माना जाता है। विशेष रूप से आलाप में यह स्वर संगति प्रमुखता से प्रयुक्त होती है। द्रुत लय में सां नि ध प, म॑ ध प, म॑ प ग म॑ ग रे सा सीधे स्वर लिए जाते हैं।

गंधार तथा निषाद स्वरों का प्रयोग अधिक रहता है। इन दोनों स्वरों पर न्यास किया जाता है। इसके साथ-साथ पंचम स्वर पर भी न्यास किया जाता है, रिषभ, मध्यम तथा धैवत स्वरों का प्रयोग सामान्य है अर्थात इन पर न्यास नहीं होता है। इन स्वरों का प्रयोग आरोह अवरोह में सदैव होता है पर इन पर न्यास नहीं किया जाता है, जैसे- नि॒ रे ग, नि॒ ध़ नि॒ रे ग रे नि॒ रे सा, नि॒ रे ग म॑ प, म॑ ध प, म॑ ध नि ध प, म॑ प ग म॑ ग रे नि॒ रे सा।

यमन राग का समप्रकृतिक राग "यमन-कल्याण" के नाम से जाना जाता है। यमन-कल्याण राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है, जैसे- प म॑ ग म ग रे सा, नि॒ रे ग म॑ प म॑ ग म ग रे सा, अर्थात् शुद्ध मध्यम दोनों तरफ से गंधार से घिरा रहता है। दूसरी ओर यमन में के वल तीव्र मध्यम का ही प्रयोग होता है।राग यमन एक अत्यन्त ही लोकप्रिय राग है। आधुनिक समय में इसकी शिक्षा प्रारम्भ में ही दे दी जाती है। इस राग में ध्रुवपद, ख्याल, गत शैली की अनेक रचनाएं सुनने को मिलती हैं। गीत, गज़ल भजन, फिल्मी गीतों में इस राग की सुन्दर-सुन्दर रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

12.3.2 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा,

  ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ ध़ प़,

  म़ ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़ ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे, ग म़ म़ प, प, म़ ग,

  रे ग म़, म़ ग रे सा

- ग म़ प, प, म़ ध प, प, म़ ध

  नी नी ध प, प, म़ ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं मं पं, पं, मं गं,

  रें मं गं, मं गं रें सां

- रें नी ध प, प, म़ ध प म़ ग,

  रे म़ ग रे ऩी रे सा।

12.3.3 यमन राग द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
						नि़	ध़	नि़	रेरे	ग	रे	नि़	रे	सा	ऽ
						दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
नि़	ध़	ऽ	नि़	सा	ऽ										
दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ										
						सा	नि़	सा	ऽ	ग	रे	ग	ममम	प	म
						दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	ऽ	ग	म	रे	ऽ										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										
अंतरा															
								प	म	ग	म	प	ध	प	ऽ
								दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म	ध	नि	ध	म	ध	प	ऽ								
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								म	ध	म	धनि	सां	नि	ध	ऽ
								दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ
रे	ऽ	ग	म	रे	ऽ	नि़	ध़								
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा								
								नि़	रेरे	ग	म	ध	निनि	रें	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नि	रेंरें	गं	रें	नि	रें	सां	ऽ								
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	नि	रेंरें	गं	रें	सां	नि	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
प	ऽ	ग	म	रे	ऽ										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										

12.3.4 यमन राग के तोड़े

- गम॑ धनि रेंगं रेंसां
  निध पम॑ गरे साऽ
- सांनि धप म॑ग रेसा
  ऩिरे गम॑ धनि सांऽ
- ऩिरे गरे ऩिरे सासा
  पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑
  पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे पध पम॑
  गम॑ पम॑ गरे सा-
- ऩिरे गम॑ धनि सांनि
  धप म॑ग रेरे ऩिसा
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑
  धम॑ धनि धनि सांऽ
- निरें गरें सारें सांनि
  धप म॑ध निरें सांऽ

- गग रेसा ऩीसा रेसा

  ऩीऩी ध़प़ म़ंप़ ध़प़

  म़ंध़ ऩीरे सासा ऩीसा

  नीरे गमं पमं गम

  गमं धनी सांनी धप

  मंध नीरें गरैं सांसां

  नीरें सांनी धप मंप

  मंध पमं गरे सासा

  ऩीरे गमं पमं गरे

  साऽ पमं गरे साऽ

  पमं गरे साऽ ऩीरे

  गमं पमं गरे साऽ

  पमं गरे साऽ पमं

  गरे साऽ ऩीरे गमं

  पमं गरे साऽ पमं

  गरे साऽ पमं गरे

- ऩिरे गरे ग- ऩिरे

  गरे ग- ऩिरे गरे

- ऩिरे गरे ग- ग-

  ग- -- ऩिरे गरे

  ग- ग- ग- --

  ऩिरे गरे ग- ग-

- ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

  ग- -- ऩिध़ ऩीरे

  गरे ऩिरे ग- --

  ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

- सांनि धप मग़ रेसा

  ऩिरे गरे ग- सांनि

  धप मग़ रेसा ऩिरे

  गरे ग- सांनि धप

  मग़ रेसा ऩिरे गरे

- ऩिसा रेऩि सारे ऩिसा

  मप़ धम़ पध मप़

  निसां रेंनि सारें ऩिसां

  गंगं रेंसां निसां रेंसां

• निनि	धप	म॑प	धप
म॑प	गम॑	गरे	सा-
ऩिरे	गरे	ग-	ऩिरे
गरे	ग-	ऩिरे	गरे
• गग	रेसा	ऩिसा	रेसा
ऩिऩि	ध़प़	म़॑प़	ध़प़
म़॑ध़	ऩिरे	सासा	ऩिसा
ऩिरे	गम॑	पम॑	गम॑
• म॑ध	निरें	सांसां	निसां
गरें	सारें	धनि	धप
धप	म॑प	म॑ग	म॑ग
रेग	रेसा	ऩिरे	गम॑
पम॑	गम॑	ग-	--
ऩिरे	गम॑	पम॑	गम॑
ग-	--	ऩिरे	गम॑
पम॑	गम॑		
• ऩिरे	सासा	ऩिरे	गरे
सासा	ऩिरे	गम॑	गरे

सासा	ऩिरे	गम॑	पम॑
गम॑	गरे	सासा	ऩिरे
गम॑	धप	म॑प	गम॑
गरे	सासा	ऩिरे	गम॑
धनि	रेंसां	सांनि	धनि
धप	म॑प	म॑प	म॑ग
रेसा	ऩिसा	ऩिरे	ग-
ऩिरे	ग-	ऩिरे	

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) प

12.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) ग

घ) सा

12.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम पहर

घ) दोपहर

12.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

12.5 यमन राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म॑ ग

ग) ध नि ध प म॑ प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म॑ ग

12.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) काफी

ख) कल्याण

ग) भैरव

घ) तोड़ी

12.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म॑ ग रे सा

ख) ग म॑ रे सा

ग) म॑ ग रे सा

घ) ग म॑ रे सा

12.8 यमन राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

12.9 यमन राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

12.10 यमन राग, कल्याण तथा यमनी रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

12.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। यह कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है तथा गंधार स्वर वादी है। निषाद को संवादी स्वर माना जाता है। यमन में तीव्र मध्यम (म') का प्रयोग होता है। इसका समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इस राग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद से किया जाता है तथा षड्ज का लंघन किया जाता है जैसे- नि॒ रे, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग, नि॒ रे ग म' प। इस प्रकार नि॒ रे करते हुए आरोह किया जाता है। निषाद से आरम्भ होने का यह अर्थ नहीं है कि षड्ज आरोह में वर्जित रहता है। नि॒ सा रे ग, सा रे ग, ध़ नि सा रे ग कर सकते हैं परन्तु अधिकतर समय नि॒ रे सा, नि॒ रे ग, ध़ नि॒ रे ग रे सा, इस स्वरावलियों को लेना ही उचित माना जाता है। अतः षड्ज के आरेह में वर्जित न होते हुए भी नि॒ रे की संगति ही दिखाई देती है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, मध्य लय/ द्रुत लय, में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर: ख)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: ख)

12.7 उत्तर: ग)

12.8 उत्तर: घ)

12.9 उत्तर: क)

12.10 उत्तर: ख)

12.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन में द्रुत गत/रजाखनी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-13
रागेश्री राग की द्रुत गत: एकताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
13.1		भूमिका
13.2		उद्देश्य तथा परिणाम
13.3		राग रागेश्री
	13.3.1	रागेश्री राग का परिचय
	13.3.2	रागेश्री राग का आलाप
	13.3.3	रागेश्री राग की द्रुत गत: एक ताल में
	13.3.4	रागेश्री राग के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
13.4		सारांश
13.5		शब्दावली
13.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.7		संदर्भ
13.8		अनुशंसित पठन
13.9		पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में राग रागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत एक ताल में तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग रागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत को एकताल में तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग रागेश्री का आलाप, द्रुत गत को एक ताल में तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- रागेश्री राग के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- रागेश्री राग की द्रुत गत, एक ताल में, को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- रागेश्री राग प, द्रुत गत, एक ताल में, को तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- रागेश्री राग को एक ताल में लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- रागेश्री राग को एक ताल में तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग रागेश्री, एक ताल में, के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

13.3 राग रागेश्री

13.3.1 रागेश्री राग का परिचय

राग - रागेश्री

थाट - खमाज

जाति - औडव षाडव

वादी - गंधार

संवादी – निषाद

स्वर - निषाद कोमल (नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम, अवरोह में पंचम

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - बागेश्री

आरोह – ऩी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म ग म रे सा

पकड़ – ध़ ऩी सा म, ग म रे सा

रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित

रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। रागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग, म ध, ऩी सा ग, म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे गंधार पर आते हैं। जैसे-ऩी सा ग, ग म रे सा।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा ग, ग म ध नी ध तथा म ग म रे सा है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ग म रे सा की संगति प्रयुक्त होती है। रागेश्री राग का आरम्भ ऩी सा ग से अधिकतर किया जाता है।

इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा की संगति होती है जबकि रागेश्री राग में ग म रे सा की संगति होती है।

13.3.2 आलाप

- सा, सा, सा, नी़ सा,

  सा, ऩी ध़ - सा रे सा,

- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,

- ध़ ऩी सा ग- म ग म रे सा

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा

- ध़ ऩी सा ग – ग म,

  ग म ग म रे सा,

- ग म ग – ग म ध – म ग,

  ग म रे सा

- म ग म ध, ध म – ध नी ध म ग,

  ग म ध नी नी सां, सां

- सां – गं गं रें सां -,

  ध नी नी सां,

  गं मं रें सां सां,

- सां नी ध नी ध – म,

  ग – म रे सा,

  ध़ ऩी ऩी सा ग- ग- म रे सा, सा

13.3.3 रागेश्री राग द्रुत गत : एक ताल लय: मध्य

x		0		2		0		3		4	
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**
स्थाई											
सा	गग	म	ग	-म	रे	सा	नी़	सा	ग	रें	नी़
दा	दिर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा
ध़	-ध़	म़	ध़	-नी़	नी़	सा	नी़	ध़	नी़नी़	गम	रेरे
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर
अन्तरा											
म	गग	म	ध	-ध	ध	नी	-नी	नी	ध	-ध	नी
दा	दिर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा
सां	-सां	सां	नी	-नी	सां	ध	नी	सांमं	गंमं	रें	रें
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा
सां	गंगं	ममं	गं	-मं	रें	सां	नी	सां	नीनी	ध	नी
दा	दिर	दिर	दा	ऽर	दा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	-ध	ध	म	ध	म	गम	रें	-रे	रे	सा	धनी
दा	ऽर	दा	दा	रार	दा	रा	दा	-द	दा	रा	दिर

13.3.4 रागेश्री राग के तोड़े

- सांनी धनी सांनी धनी

  धम गम रेसा नीसा

  धनी साध नीसा धनी

- *गम* धनी सांनी धनी

  सां- म- सा- --

  गम धनी सांनी धनी

  सां- म- सा- --

  गम धनी सांनी धनी

  सां- म- सा- --

- *गम* धनी सांनी धनी

  सां- सां- सां- --

  गम धनी सांनी धनी

  सां- सां- सां- --

  गम धनी सांनी धनी

  सां- सां- सां- --

- नीसा *गम* धनी धम

  गम धग मरे सासा

ऩीसा	*गम*	रेरे	सा-
ऩीसा	*गम*	रेरे	सा-
ऩीसा	*गम*	रेरे	सा-
• सांनी	धनी	धम	पध
ग-	*गम*	रेसा	ऩीसा
गम	*गम*	ध-	गम
रेसा	*साग*	*मग*	मध
-म	रेरे	सासा	- *ग*
मग	मध	-ग	मरे
• धऩी	सा,ध़	ऩीसा,	ध़ऩी,
गम	ध,ग	मध,	गम,
धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,
धनी	सांनी	धम	गम
धम	गम	रेरे	सासा
गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी
• मध	नीध	सांनि	धम
गम	धम	गम	रेसा

• मध	निध	मग	मध
नीध	धम	गम	रेसा
• ध़ऩी	साऩी	सा-	ध़ऩी
साऩी	सा-	ध़ऩी	साऩी
• साऩी	ध़ऩी	साग	मध
नीनी	धम	गम	रेसा
• साऩी	ध़ऩी	साग	मध
नीसां	नीध	मग	गम
रेसा	सांनी	धम	धनी
धम	गम	रेसा	ऩीसा
• मध	नीसां	धनी	सानी
धम	गम	गम	रेसा
गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी
• साऩी	ध़ऩी	रेसा	ऩीसा
गम	रेसा	धम	गम
नीध	सांनी	धम	गम
रेसा	ऩीसा	रेसा	सा-

• साग	मग	मध	धम
गम	रेसा	ऩीरे	साऽ
• सांनी	धनी	साग	मध
नीनी	धम	गम	रेसा
• गम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--
गम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--
गम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--
• ऩीसा	गम	धनी	धम
गम	धम	गम	रेसा
ऩीसा	गम	ग-	ऩीसा
गम	ग-	ऩीसा	गम
• ध़ऩी	साग	ऩीसा	गम
साग	मध	गम	धनी
मध	नीसां	धनी	सांगं
मरें	रेंसां	नीध	नीध

मग	गम	रेसा	ऩीसा
ग-	गम	ध-	--
ऩीसा	ग-	गम	ध-
--	ऩीसा	ग-	गम

- म़ म़ म़ ध़ ध़ ध़ ऩी ऩी
  ध़ ध़ ध़ ऩी ऩी ऩी सा सा
  ऩी ऩी ऩी सा सा सा रे रे
  सा सा सा ग ग ग म म
  ग ग ग म म म ध ध
  म म म ध ध ध नी नी
  ध ध ध नी नी नी सा सां
  नी नी नी सां सां सां गं गं
  सां सां सां गं गं गं मं मं
  रें रें रें सां सां सां नी नी
  सां सां सां नी नी नी ध ध
  नी नी नी ध ध ध म म
  ध ध ध म म म ग ग
  ग ग ग म म म रे रे

साऽ साऽ ऽऽ साऽ

साऽ ऽऽ साऽ साऽ

- ऩीसा ऩीसा ध़ऩी ध़ऩी

  म़ध़ म़ध़ म़ध़ ऩीसा

  ध़ऩी सासा साग मग

  गम धनी धम गम

  गम धध मध नीनी

  धनी सांसां नीसां नीसां

  धनी धनी धनी सांनी

  धम धनी धम धम

  गम गम रेसा रेसा

  ऩीसा गऩी साग ऩीसा

- ध़ऩी साऩी साऽ ऽऽ

  ऽऽ ध़ऩी धऩी साऽ

  ऽऽ ऽऽ ध़ऩी साऩी

- ऩीऩीऩी सासासा गगग ममम

  धधध नीनीनी सांसांसां गंगंग

  मंमंमं रेंरेंरें सांसांसां नीनीनी

धधध	ममम	धधध	ममम
गगग	ममम	रेरेरे	सासासा
ऩीनीऩी	सासासा		

-
सानी	ध़नी	साऽ	ऽऽ
ऽऽ	सानी	धनी	साऽ
ऽऽ	ऽऽ	सानी	ध़नी

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 रागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) नी

घ) ध

13.2 रागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नी

ग) प

घ) म

13.3 रागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

13.4 रागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) निषाद

13.5 रागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) ग

घ) सा

13.6 रागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

13.7 रागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध <u>नि</u> ध प, म ग

ख) ध सां <u>नि</u> ध प, म ग

ग) <u>नि</u> ध म ग म रे

घ) <u>नि</u> सां <u>नी</u> ध म ग रे

13.8 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

13.9 रागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

13.10 रागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

13.4 सारांश

रागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। रागेश्री राग खमाज थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-षाडव मानी जाती है। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में निषाद कोमल प्रयुक्त होता है। रागेश्री राग के आरोह में रिषभ, पंचम तथा अवरोह में पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना जाता है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। रागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य लय/ द्रुत लय, में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग बागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है बागेश्री - नी ध, म प ध ग रागेश्री – ग म ध नी ध म। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। बागेश्री राग में म ग रे सा।

13.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

13.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर: ख)

13.3 उत्तर: ग)

13.4 उत्तर: घ)

13.5 उत्तर: क)

13.6 उत्तर: ख)

13.7 उत्तर: ग)

13.8 उत्तर: घ)

13.9 उत्तर: क)

13.10 उत्तर: ख)

13.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1999). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग रागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग रागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग रागेश्री की द्रुत गत को एकताल में लिखिए।

प्रश्न 4. राग रागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-14
सुगम संगीत भाग 1 (गायन)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
14.1	भूमिका
14.2	उद्देश्य तथा परिणाम
14.3	सुगम संगीत के अंतर्गत देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां
14.3.1	सुगम संगीत : देशभक्ति गीत (सारे जहाँ से अच्छा) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
14.3.2	सुगम संगीत : देशभक्ति गीत (वंदे मातरम्) 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
14.4	सारांश
14.5	शब्दावली
14.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
14.7	संदर्भ
14.8	अनुशंसित पठन
14.9	पाठगत प्रश्न

14.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति संबंधी गीतों को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति संबंधी गीतों के विषय में जान सकेगें तथा गा सकेगें।

14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति गीतों को सही ढंग से गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति गीतों को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति के गीतों को सही ढंग से गाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी सुगम संगीत के अंतर्गत देशभक्ति के गीतों को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में सुगम संगीत को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

14.3 सुगम संगीत के अंतर्गत देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां

14.3.1 सुगम संगीत : देशभक्ति गीत (सारे जहाँ से अच्छा) 1

'सारे जहां से अच्छा' देशभक्ति गीत मुहम्मद इक़बाल द्वारा लिखा गया है। लगभग 1904 में लिखे गये इस गीत में भारत जिसे हिन्दुस्तान भी कहा जाता है का सुंदर वर्णन किया गया है। प्रस्तुत गीत में भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियों, नदियों, धर्मों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है। गीतकार ने भारत की इन्हीं विविधताओं को, यहां की संस्कृति को अपने शब्दों में लिखा है।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।

वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हजारों नदियाँ।

गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिना हमारा।।

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।

।

लय: द्रुत **ताल: कहरवा**

स्थायी

x		0		x		0	
						--	साऽ
						ऽऽ	सा-
रेम	--	पध	-म	पध	ध-	--	प-
रेऽ	ऽऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	सां-
न्दोऽ	ऽस	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	हम
नांनि	-ध	नि-	-ध	निरें	सा-	--	ध-
बुल	ऽबु	लेऽ	ऽहैं	उस	कीऽ	ऽऽ	वोऽ
पप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	सां-
गुल्	ऽसि	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	सा
रेम	--	पध	-म	पध	ध-	--	प-
रेऽ	ऽऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	-
न्दोऽ	ऽस	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	ऽऽ

x		0		x		0	
अन्तरा							
सां-	-सां	धम	-ध	सां-	सां-	--	धसां
वऽ	ऽत	वोस	बसे	ऊंऽ	चाऽ	ऽऽ	हम
रें-	--	सारें	गरे	सांनि	ध-	ध-	--
साऽ	ऽऽ	याआ	ऽस	मांऽ	काऽ	ऽऽ	ऽऽ
रे-	-सां	निसां	-नी	धनि	धप	--	प-
संऽ	ऽत	रीऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	बांऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म‘-	- -	-सा-
पाऽ	ऽस	बाऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	सा ऽ
रेम	-म	पध	-म	पध	ध-	--	प-
रेऽ	ऽऽ	जहां	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	--
न्दोऽ	ऽस	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	ऽऽ

अन्य अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

14.1 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

14.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

14.3 प्रस्तुत गीत, में हमारे देश भारत को सारे जहाँ से अच्छा कहा गया है।

क) गलत

ख) सही

14.4 सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, गीत को किसने लिखा है।

क) मुहम्मद इक़बाल

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

14.3.2 सुगम संगीत : देशभक्ति गीत (वंदे मातरम्) 2

आदरणीय बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखे गए उपन्यास 'आनन्द मठ' में रचित यह रचना, भारत का राष्ट्रीय गीत है 'वंदेमातरम्'। इसे 1882 लिखा गया था। यह मूल रूप से बंगला व संस्कृत दो भाषाओं में लिखा गया था। राष्ट्रीय अवसरों में राष्ट्रीय गीत को गाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक सभा, जो1896 में हुई थी, में सर्वप्रथम इसे गाया गया। वंदेमातरम्, स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य नारा रहा।

गीत: वंदेमातरम्

रचना: बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

सुजलां सुपफलां, मलयज शीतलाम्

शस्य श्यामलां मातरम् वंदे मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्

फुल्ल-कुसुमितां-द्रुम-दल शोभिनीम्।

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्

सुखदां, वरदां, मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

गायन शैली: अनिबद्ध

स्थायी

सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-

व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सारें	नि-	धप	-प	पध	म	गरे	-रे
सुज	ला-	--	-म	सुफ	ला	--	-म्
रेप	म-	गरे	-ग	सा	-	-	-सा
मल	यज	शी-	-त	ला	-	-	-म
सा	रेम	पम	प	-प	नीध	प	-
शस्य	श्या	-म	लां	-मा	-त	रम	-
म	प	-नी	सांनी	सां	-	-	-
वं	दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

अन्तरा

म	प	नी	नी	नीनी	सांनी	सां	-नी
शु	भ्र	ज्यो	त्स्ना	पुल	कित	या	-मि
सां	-	नी	नीनी	सांनी	सां	सारें	सांनी
नीम्	-	पुफ	ल्लकु	सुमि	त	द्रुम	दल
नीध	नीध	प	-	रेरे	मग	रे	-
शो-	-भि	नीम्	-	सुहा	-सि	नीम्	-
रेनी	धनी	ध	-ध	प	-	मप	नी
सुम	धुर	भा-	-षि	णीम्	-	सुख	दां
नीनी	नी	-नी	सांनी	सां	-	म	प
वर	दां	-मा	-त	रम्	-	वं	दे
-नी	सांनी	सां	-	-	-	म	प
-मा	-त	रम्	-	-	-	वं	दे
-नि	सांनि	सां	-	-	-		
-मा	-त	रम्	-	-	-		
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

14.5 प्रस्तुत गीत मूल रूप से कितनी भाषाओं में लिखा गया था।

क) 5

ख) 3

ग) 1

घ) 2

14.6 वंदे मातरम्, गीत कब लिखा गया था ।

क) 1857

ख) 1947

ग) 1882

घ) 1906

14.7 वंदे मातरम्, गीत किस उपन्यास का भाग है।

क) रामायण

ख) आनन्द मठ

ग) महाभारत

घ) सामवेद

14.8 वंदे मातरम्, गीत को किसने लिखा है।

क) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) विनय चंद्र मोदगल

14.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में सुगम संगीत के अंतर्गत राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए।

14.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- अनिबद्ध: ताल रहित गायन/वादन
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

14.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1 उत्तर: घ)

14.2 उत्तर: ग)

14.3 उत्तर: ख)

14.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

14.5 उत्तर: घ)

14.6 उत्तर: ग)

14.7 उत्तर: ख)

14.8 उत्तर: क)

14.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

14.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

14.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 3. अनिबद्ध रूप से किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 5. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

इकाई-15
धुन (वाद्य संगीत)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
15.1	भूमिका
15.2	उद्देश्य तथा परिणाम
15.3	धुनें तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में)
15.3.1	'हिन्द देश के निवासी' गीत की धुन (वाद्य संगीत)
15.3.2	'जय जन भारत जन मन अभिमत' देशभक्ति गीत की धुन (वाद्य संगीत)
15.3.3	धुन: भजन पर आधारित: स्वरलिपि
15.3.4	धुन: गज़ल पर आधारित: स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
15.4	सारांश
15.5	शब्दावली
15.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.7	संदर्भ
15.8	अनुशंसित पठन
15.9	पाठगत प्रश्न

15.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राष्ट्रभक्ति गीतों, भजन तथा गज़ल की धुनों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। संगीत, भारतीय संस्कृति का एक विशेष अंग है। संगीत के अंतर्गत गायन, वादन व नृत्य तीनों आते हैं। वादन के अंतर्गत विभिन्न गीतों, लोक गीत, भजनों, गज़लों की आदि को बजाया जाता है। इसमें भक्ति भक्ति रस, श्रृंगार रस करुण रस, वीर रस, आदि से संबंधित धुनें मिलती हैं। इन धुनों के रचयिता का पता नहीं होता है परंतु यह धुनें मानव के मन में अपना प्रभाव छोड़ती हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी धुनों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा सकेंगे।

15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- धुन को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- धुन को बजाने में सक्षम होंगे।
- धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

15.3 धुनें तथा उनकी स्वरलिपियां

15.3.1 'हिन्द देश के निवासी' गीत की धुन (वाद्य संगीत)

प्रस्तुत धुन में भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियाँ, पेड़, पौधे, लोगों के रहन-सहन, पशुओं, पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है। गीतकार ने भारत की इन्हीं विविधताओं को अपने शब्दों में, अनेकता में एकता की भावना को लेकर लिखा है। गीत के लेखक विनय चंद्र मोदगल हैं।

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं

रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं ।।

(1) बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली

प्यारे प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।

(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी

गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।

(3) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी

जाके मिल गईं सागर में, हुई सब एक हैं।

लय: मध्य **ताल: कहरवा**

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
स्थायी							
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	साऩी	प़
-	प़ऩी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
म	-म	म	मग	रेग	-ग	रेसा	सानि
-	ऩीसा	ऩीसा	रेरे	सा	-सा	सा	-
अंतरा							
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
अंतरा							
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	साऩी	प़
-	प़ऩी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-

15.3.2 देशभक्ति गीत की धुन 'जय जन भारत जन मन अभिमत' (वाद्य संगीत)

इस धुन को सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखा गया है। इस धुन में भारत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की गई है और भारत देश की प्रमुख विशेषतायें बताई गई हैं। हिमालय पर्वत और गंगा का वर्णन किया है। भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है। ऐसी धरती, जिसके माथे पर हिमालय पर्वत सुशोभित हैं, जिसकी कटि में विन्ध्याचल पर्वत और चरणों में अथाह जलराशि लिये सागर है, की प्रशंसा की गई है। भारत की इस भूमि पर हरे-भरे खेतों, नदियों और काम करते हुए लोगों की महिमा को बताकर/गाकर, प्रकृति का सम्मान किया गया है।

जय जन भारत जन मन अभिमत

जन गण तंत्र विधाता

1- गौरव भाल हिमालय उज्जवल हृदय हार गंगा जल

कटि विंध्यांचल सिंधु चरण तल महिमा शाश्वत गाता

2- हरे खेत लहरें नद निर्झर, जीवन शोभा उर्वर

विश्व कर्मरत कोटि बाहुकर, अगणित पद ध्रुव पथ पर

3- प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम घ्वनित गुण गाता

जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता

जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता

लय: मध्य **ताल: कहरवा**

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
स्थायी							
ग	ग	म	प	प	-	प	प
प	प	ध	प	म	प	म	ग
-	गग	-म	प	प	-	सां	प
ध	-	ध	-	म	-	-	-
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
प	-	प	-	-	-	-	-
ग	ग	म	प	प	-	प	प
प	प	ध	प	म	प	म	ग
-	गग	-म	प	प	-	सां	प
ध	-	ध	-	म	-	-	-
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
प	-	प	-	-	-	-	-

अंतरा

प	-	प	प	सां	-	सां	सां
सां	-	रें	गं	सां	-	रें	रें
रें	रें	रें	रें	-	गं	सारें	सांनि
नी	-	नी	नी	धनी	सांनी	ध	प
-	म	प	प	प	-	प	प
रें	-	सां	नी	सां	ध	ध	ध
-	म	म	म	ध	ध	ध	ध
सां	-	सां	-	प	-	-	-
प	-	प	म	ग	रे	सा	-
प	प	प	प	-	प	प	ध
ध	नी	नी	-	-	-	-	-
प	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी
रें	-	सां	-	-	नी	ध	प
रें	-	सां	-	-	-	-	-
गं	गं	गं	गं	गं	-	गं	गं

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
गं	-	गं	सां	रें	-	रें	-
रें	-	रें	रें	रें	-	सां	नी
रें	-	सां	-	-	-	-	-
						प	प
सां	-	-	-	-	-	प	प
रें	-	-	-	-	-	प	प
गं	-	-	-	-	-	-	-
गं	-	रें	सां	रें	-	सां	नी
सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
ग	ग	म	प	प	-	प	प
प	प	ध	प	म	प	म	ग
-	गग	म	प	प	-	सां	प
ऽध	-	ध	-	म	-	-	-
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
प	-	प	-	-	-	-	-

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
प	-	प	-	-	-	-	-
प	प	प	प	प	-	प	प
ध	-	ध	-	-	-	-	-
ध़	ध	ध	ध	ध	-	ध	ध
नी	-	नी	-	-	-	-	-
नी	नी	नी	नी	नी	-	नी	नीरें
(रें)	सां	सां	-	-	-	-	-

15.3.3 धुन: भजन पर आधारित: स्वरलिपि

हरि तुम हरो जन की भीर।

द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढायो चीर॥

भक्त कारण रूप नरहरि, धरयो आप शरीर।

हिरणकश्यपु मार दीन्हों, धरयो नाहिंन धीर॥

बूडते गजराज राखे, कियो बाहर नीर।

दासी 'मीरा लाल गिरिधर, दु:ख जहाँ तहँ पीर॥

0			2		3		0			2		3	
1	2	3	4	5	6	7	1	2	3	4	5	6	7
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	नी	ध	-	पम	ग
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	ध	पम	ग	ग	-
म	-	मसां		ध	प	म	ध	-	नी	नी	प	म	-
मध	मग	रे	रे	-	मग	रेसा	सा	सा	ग	धसां	ध	रें	सां
सां	ध	नी											
अंतरा													
धसां	सां	सां	गं	नी	रें	रें	सां	पग	प	नी	ध	नी	रेंसां
ध	ध	ध	ध	-	धनी	ध	प	ध	प	म	-	ग	-
धसां	सां	सां	गं	नी	रें	रें	सां	पग	प	नी	ध	नी	रेंसां
ध	ध	ध	ध	-	धनी	ध	प	ध	प	म	-	ग	-
म	म	म	म	-	म	म	गम	प	धप	म	ग	रेसा	सा
ध	ध	ध	ध	-	धसां	गं	गं	सां	नी	ध	प	म	ग
म	म	म	म	-	म	म	गम	प	धप	म	ग	रेसा	सा
ध	ध	ध	ध	-	धसां	गं	गं	सां	नी	ध	प	म	ग

0			2		3		0			2		3	
1	2	3	4	5	6	7	1	2	3	4	5	6	7
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	नी	ध	-	पम	ग
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	ध	पम	ग	ग	-
म	-	मसां		ध	प	म	ध	-	नी	नी	प	म	-

15.3.4 धुन: गज़ल पर आधारित: स्वरलिपि

गज़ल: अदम **गायक: जगजीत सिंह**

ताल: कहरवा

हँस के बोला करो बुलाया करो
आप का घर है आया जाया करो

मुस्कुराहट है हुस्न का ज़ेवर
रूप बढ़ता है मुस्कुराया करो

हद से बढ़ कर हसीन लगते हो
झूटी क़स्में ज़रूर खाया करो

हुक्म करना भी इक सख़ावत है
हम को ख़िदमत कोई बताया करो

बात करना भी बादशाहत है
बात करना न भूल जाया करो

ताकि दुनिया की दिलकशी न घटे
नित-नए पैरहन में आया करो

हम हसद से 'अदम' नहीं कहते
उस गली में बहुत न जाया करो

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
				ग	रे^{ग}	ग	म
गरेसा	-	-	-	सा	प़$^{सा}$	-	-
प़	रेसारे	-	सा	रे^{ग}	सा	सा	-
-	-	-	-	ग	रे^{ग}	ग	म
गरे	सा	रेसा	-	सा	सा	-	प़
रे	-	गरेसारे	सा	रे^{ग}	सा	सा	-
-	-	-	-	सा	रे	गम	ग$^{रे}$
रे	रे	रे	-	-	रेगरे	-	ग
म	गम	ग	रेग	रे	सा	सा	-
-	-	-	-				
				ग	म	पम	म
प	म	ग	-	-	-	ग	रे
सा	म	म^{ग}	म^{ग}	प^{ध}	पम	ग	ग
-	-	-	-			रे	सा
म	म^{ग}	म^{ग}	प^{ध}	पम	ग	ग	-
गरेसा	-	-	-	ग	रे	ग	म

x				0			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**
गरे	सा	-	-	सा	सा	प़	प़
रे	-	गरेसारे	सा	रे	सा	सा	-
-	-	-	-				

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

15.1 प्रस्तुत धुन 'हिन्द देश के निवासी' किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

15.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 15

ग) 8

घ) 10

15.3 प्रस्तुत धुन,' हिन्द देश के निवासी' अनेकता में एकता की भावना को लेकर लिखा गया है।

क) गलत

ख) सही

15.4 हिन्द देश के निवासी गीत को किसने लिखा है।

क) विनय चंद्र मोदगल

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

घ) पं. गोपालदास

15.5 प्रस्तुत धुन 'जय जन भारत जन मन अभिमत' किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

15.6 भजन में केवल कहरवा ताल प्रयोग में लाई जाती ।

क) हां

ख) नहीं

15.0 'जय जन भारत जन मन अभिमत' गीत में भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है।

क) गलत

ख) सही

15.8 जय जन भारत जन मन अभिमत गीत को किसने लिखा है।

क) सुमित्रानंदन पंत

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) विनय चंद्र मोदगल

15.9 रूपक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 7

ख) 12

ग) 16

घ) 8

15.10 गज़ल किसके अंतर्गत आती है?

क) सुगम संगीत

ख) शास्त्रीय संगीत

ग) शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

15.4 सारांश

उपरोक्त वर्णित धुनें, राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत, गजल तथा भजन शैली पर आधारित हैं। भजन शैली में जहां आध्यात्मिकता दृष्टिगोचर होती है वही गजल शैली में श्रृंगारिकता अधिकता से दिखाई देती है। संगीत को आगे बढ़ानें तथा राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीतों की धुनें विशेष भूमिका निभाती हैं। यह धुनें अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध की गर्द हैं। इन धुनों में दादरा, कहरवा, रूपक इत्यादि तालों का प्रयोग मुख्य रूप से तबला तथा ढोलक पर होता है। वाद्य संगीत के अंतर्गत धुन को बजाया जाता है जो सुनने में बहुत ही सुंदर तथा मधुर लगती हैं।

15.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- चीर - कपड़ा
- हसीन - सुंदर
- सख़ावत - दानशीलता, उदारता, फैयाजी, खुला हाथ
- ख़िदमत - सेवा सत्कार

15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 उत्तर: घ)

15.2 उत्तर: ग)

15.3 उत्तर: ख)

15.4 उत्तर: क)

15.5 उत्तर: घ)

15.6 उत्तर: ख)

15.7 उत्तर: ख)

15.8 उत्तर: क)

15.9 उत्तर: क)

15.10 उत्तर: क)

15.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 5. किसी एक गज़ल की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

अध्याय-16

सुगम संगीत भाग 2 (गायन)

अध्याय की रूपरेखा

क्रम	विवरण
16.1	भूमिका
16.2	उद्देश्य तथा परिणाम
16.3	सुगम संगीत के अंतर्गत गज़ल, भजन, लोक गीत तथा उनकी स्वरलिपियां
16.3.1	सुगम संगीत का परिचय
16.3.2	भजन: हरि तुम हरो जन की भीर के बोल तथा स्वरलिपि
16.3.3	भजन: शिव कैलाशों के वासी : चाचर (दीपचंदी) ताल
16.3.4	गज़ल: हँस के बोला करो के बोल तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
16.4	सारांश
16.5	शब्दावली
16.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
16.7	संदर्भ
16.8	अनुशंसित पठन
16.9	पाठगत प्रश्न

16.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, संगीत स्नात्कोत्तर क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में सुगम संगीत के संबंध में जानकारी दी गई है। भारतीय संगीत विद्या में सुगम संगीत शामिल है। सुगम संगीत वह संगीत है जो आम लोगों को पसंद आता है और जिसे आसानी से बजाया और सीखा जा सकता है और कोई विशिष्ट नियम नहीं है। इसी श्रेणी में लोक गीत, लोकप्रिय संगीत, भजन, फ़िल्मी गीत आदि आते हैं। इस इकाई में सुगम संगीत के गीतों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। सुगम संगीत सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि को सुगम संगीत के अंतर्गत रखा जाता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सुगम संगीत के स्वरूप के साथ-साथ उसे गाने व स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से गा सकेंगे।

16.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- सुगम संगीत की जानकारी प्रदान करना।
- सुगम संगीत को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न प्रकार के सुगम संगीत को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी सुगम संगीत के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- सुगम संगीत को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- सुगम संगीत को गाने में सक्षम होंगे।
- सुगम संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी

16.3 सुगम संगीत के अंतर्गत गज़ल, भजन, लोक गीत तथा उनकी स्वरलिपियां

16.3.1 सुगम संगीत का परिचय

सुगम संगीत अर्थात ऐसा संगीत जो सीखने और बजाने में आसान है। भारतीय संगीत का एक हिस्सा सुगम संगीत है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के नियमों से यह बंधा हुआ नहीं है। सुगम संगीत लोकप्रिय है। फिल्मी गीत, भजन, लोकप्रिय संगीत भी इसी श्रेणी में आते हैं। गीत के सरल रूप को सुगम संगीत की "लोकप्रियता के कारण" माना जा सकता है। सुगम संगीत की यही विशेषता है। गीत, ग़ज़ल और भजन सुगम संगीत की तीन प्रमुख विधाएँ हैं। सुगम संगीत में राग सिर्फ आधार रूप से प्रयुक्त होते हैं। इसमें शब्दों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, इसलिए इसमें शब्द महत्वपूर्ण है। यह संगीत की वह कला है, जहां संगीतज्ञ स्वर और लय के माध्यम से अपने दिल की सबसे छोटी भावनाओं को भी व्यक्त करता है। पुराने समय में साहित्यकार और संगीतज्ञ, फिल्म की कथावस्तु और स्वभाव से मेल खाने वाले गीतों को गाते थे जिससे रस उत्पन्न होता था, जिसे कर्णप्रिय सुरीले वाद्ययंत्र अत्यन्त हृदयग्राही बनाते थे। इसमें भक्ति भक्ति रस, श्रृंगार रस करुण रस, वीर रस, आदि से संबंधित गीत मिलते हैं।

16.3.2 भजन: हरि तुम हरो जन की भीर के बोल तथा स्वरलिपि रूपक ताल

हरि तुम हरो जन की भीर।

द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढायो चीर॥

भक्त कारण रूप नरहरि, धरयो आप शरीर।

हिरणकश्यपु मार दीन्हों, धरयो नाहिंन धीर॥

बूडते गजराज राखे, कियो बाहर नीर।

दासि 'मीरा लाल गिरिधर, दु:ख जहाँ तहँ पीर॥

0			2		3		0			2		3	
1	2	3	4	5	6	7	1	2	3	4	5	6	7
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	नी	ध	-	पम	ग
ह	रि	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	ध	पम	ग	ग	-
ह	रि	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ	रो	ऽ	ज	न	ऽ
म	-	मसां		ध	प	म	ध	-	नी	नी	प	म	-
की	ऽ	भी	ऽ	र	ऽ	ऽ	द्रो	ऽ	प	दी	ऽ	की	ऽ
मध	मग	रे	रे	-	मग	रेसा	सा	सा	ग	धसां	ध	रें	सां
ला	ऽ	ज	रा	ऽ	खी	ऽ	तु	म	ब	ढा	ऽ	यो	ऽ
सां	ध	नी											
ची	ऽ	र											

अंतरा

0			2		3		0			2		3	
1	2	3	4	5	6	7	1	2	3	4	5	6	7
धसां	सां	सां	गं	नी	रें	रें	सां	पग	प	नी	ध	नी	रेंसां
भ	क्	त	का	ऽ	र	ण	रू	ऽ	प	न	र	ह	रि

0			2		3		0			2		3	
1	2	3	4	5	6	7	1	2	3	4	5	6	7
ध	ध	ध	ध	-	धनी	ध	प	ध	प	म	-	ग	-
ध	र	यो	आ	ऽ	प	ऽ	श	री	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	म	-	म	म	गम	प	धप	म	ग	रेसा	सा
हि	र	ण	क	ऽ	श्य	पु	मा	ऽ	र	दी	ऽ	न्हों	ऽ
ध	ध	ध	ध	-	धसां	गं	गं	सां	नी	ध	प	म	ग
ध	र	यो	ना	ऽ	हिं	न	धी	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	नी	ध	-	पम	ग
ह	रि	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ
ध	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	ध	ध	पम	ग	ग	-
ह	रि	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ	रो	ऽ	ज	न	ऽ
म	-	मसां		ध	प	म							
की	ऽ	भी	ऽ	र	ऽ	ऽ							

16.3.3 भजन शिव कैलाशों के वासी चाचर (दीपचंदी) ताल

स्थाई

शिव कैलाशों के वासी,
धौलीधारों के राजा
शंकर संकट हरणा।

अन्तरा

तेरे कैलाशों का अंत ना पाया,
अंत बेअंत तेरी माया,
ओ भोले बाबा
अंत बेअंत तेरी माया
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा
बेल की पत्ती भांग धतूरा
शिवजी के मान को लुभाए
ओ भोले बाबा
शिवजी के मन को लुभाए
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....
एक था डेरा तेरा,चांबे रे चौगाना
दूजा लाई दीता भरमौरा
ओ भोले बाबा
दूजा लाई दीता भरमौरा
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....
दूरा बे दूरां ते जातरू जे आंदे,
करदे जै जै कारा,
ओ भोले बाबा
करदे जय जयकारा
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	नि़	-	-	नि़	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
अन्तरा													
रे	-	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	कै	ऽ	ला	ऽ	ऽ	शा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
अं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	नी	पा	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	हो	मे	रे	ऽ	शं	ऽ	भू	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

16.3.4 गज़ल: हँस के बोला करो के बोल तथा स्वरलिपि

गज़ल: अदम **गायक: जगजीत सिंह**

ताल: कहरवा

हँस के बोला करो बुलाया करो
आप का घर है आया जाया करो

मुस्कुराहट है हुस्न का ज़ेवर
रूप बढ़ता है मुस्कुराया करो

हद से बढ़ कर हसीन लगते हो
झूटी क़स्में ज़रूर खाया करो

हुक्म करना भी इक सख़ावत है
हम को ख़िदमत कोई बताया करो

बात करना भी बादशाहत है
बात करना न भूल जाया करो

ताकि दुनिया की दिलकशी न घटे
नित-नए पैरहन में आया करो

हम हसद से 'अदम' नहीं कहते
उस गली में बहुत न जाया करो

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
				ग	रे^{ग}	ग	म
				हंस	के	बो	ऽ
गरेसा	-	-	-	सा	प़$^{सा}$	-	-
लाऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	रो	ऽ	ऽ
प़	रेसारे	-	सा	रे^{ग}	सा	सा	-
बु	लाऽऽ	ऽ	ऽ	या	क	रो	ऽ
-	-	-	-	ग	रे^{ग}	ग	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हंस	के	बो	ऽ
गरे	सा	रेसा	-	सा	सा	-	प़
लाऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	रो	ऽ	बु

x				0			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**
रे	-	गरेसारे	सा	रे^{ग}	सा	सा	-
ला	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	या	क	रो	ऽ
-	-	-	-	सा	रे	गम	ग$^{रे}$
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	प	काऽ	ऽ
रे	रे	रे	-	-	रेगरे	-	ग
घ	र	है	ऽ	ऽ	आऽऽ	ऽ	या
म	गम	ग	रेग	रे	सा	सा	-
जा	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	या	क	रो	ऽ
-	-	-	-	आपका घर है.....			
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x				0			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**
				ग	म	पम	म
				मुस	क	राऽ	ऽ
प	म	ग	-	-	-	ग	रे
ह	ट	है	ऽ	ऽ	ऽ	हु	स्न
सा	म	म^{ग}	म^{ग}	प^{ध}	पम	ग	ग
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जेऽ	ऽ	वर
-	-	-	-			रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मुस्कुराहट है		हु	स्न

				0			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**
म	म^{ग}	म^{ग}	प^{ध}	पम	ग	ग	-
का	ऽ	ऽ	ऽ	जेऽ	ऽ	वर	ऽ
गरेसा	-	-	-	ग	रे	ग	म
ऽऽऽ	ऽ	-	-	मु	स्क	रा	ऽ
गरे	सा	-	-	सा	सा	प़	प़
नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	भू	ऽ	ल
रे	-	गरेसारे	सा	रे	सा	सा	-
जा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	या	क	रो	ऽ
-	-	-	-				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आप का घर है आया जाया करो			

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 प्रस्तुत भजन हरि तुम हरो जन की भीर किस ताल में है।

(क) रूपक

(ख) दादरा

(ग) कहरवा

(घ) दीपचंदी

16.2 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

(क) 12

(ख) 14

(ग) 10

(घ) 8

16.3 प्रस्तुत भजन शिव कैलाशों के वासी किस ताल में है।

(क) रूपक

(ख) दादरा

(ग) कहरवा

(घ) दीपचंदी

16.4 रूपक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

(क) 12

(ख) 14

(ग) 07

(घ) 10

16.4 सारांश

सुगम संगीत के अंतर्गत उपरोक्त दोनों भजन रूपक ताल और चाचर (दीपचंदी) ताल में तथा गज़ल कहरवा ताल में निबद्ध है जो सुनने में बहुत ही मधुर और ह्रदयग्राही हैं। यह भजन मानव को अध्यात्म की ओर प्रेरित करने का कार्य करते हैं। भजनों के साथ मुख्य रूप से तबला तथा ढोलक की संगति की जाती है। हारमोनियम का प्रयोग भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त झांझ, मंजीरे, करताल इत्यादि का प्रयोग इन भजनों में भक्ति रस को जागृत करने का कार्य करता है। वहीं दूसरी ओर गजल के अंतर्गत कहरवा, दादरा, रूपक आदि तालों का प्रयोग होता है तथा साथ में तबला, ढोलक तथा अन्य वाद्यों की संगति की जाती है। गजलों कीमुख्य भाषा उर्दू होती है।

16.5 शब्दावली

- हरणा - हरण करने वाले
- जातरू - तीर्थयात्री
- आंदे - आते हैं

- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

16.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 (क)

16.2 (ख)

16.3 (घ)

16.4 (ग)

16.7 संदर्भ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

16.11 प्रश्नावली

प्रश्न 1. सुगम संगीत के अंतर्गत कोई एक रचना सुनाइए।

प्रश्न 2. सुगम संगीत से आप क्या समझते हैं।

प्रश्न 3. सुगम संगीत के अंतर्गत कोई एक रचना की स्वरलिपि लिखिए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग रागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग रागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 5. राग यमन का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 6. राग भैरवी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 8. किसी एक गज़ल की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 9. किसी एक भजन की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 10. किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि लिखिए।